काव्यशैली

शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति

प्रबंध संपादक
रामश्याम 'हसीन'
संपादक
शैली भागवत 'आस'
सह-संपादक
संगीता अहलावत
कानूनी सलाहकार
अजय मिश्रा दबंग
संरक्षक
मंगल नसीम (दिल्ली)
लव कुमार प्रणय (अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)
रमेश शर्मा (चित्तौड़गढ़, राजस्थान)
सावित्री मलिक (दिल्ली)

सर्वाधिकार पत्रिका के स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक के पास सुरक्षित हैं।

स्वामी, प्रकाशक रामश्याम द्वारा आलम ग्राफिक्स से डिज़ाइन एवं मुद्रक कलर एज आनंद पर्वत दिल्ली से प्रिंट होकर RZ-149, मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली-83 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित कोई भी जानकारी व विचार लेखकों के अपने हैं इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
काव्यशैली पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना/समाचार/आलेख से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस सामग्री का किसी भी तरह से प्रयोग (छाया प्रति/तथ्य/सामग्रीगत) भारतीय कॉपी राइट एक्ट के तहत दण्डनीय अपराध है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र दिल्ली राज्य होगा।

काव्यशैली मासिक पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।

kavyashaily049@gmail.com | 7982407065, 9425478866
https://www.sahityashreeprakashan.com/kavyashaily/

इस अंक में...

अतिथि संपादकीय	संगीता अहलावत	4
कविताएँ/गीत/ग़ज़ल		
मैं हूँ गणेश	अनीता चमोली 'अनू'	5
ग़ज़ल	रशीद अहमद शेख़ 'रशीद'	5
हिन्दी हमारा स्वाभिमान	डॉ. कृष्णा जोशी	5
एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता	डॉ. संगीता बिंदल	6
पढ़ना अच्छा रहता है	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	6
शिक्षा और शिक्षक	कृष्णा गौतम	6
शिक्षा वह दीप जो बुझता नहीं	दिनेश चौहान	7
शिक्षा और शिक्षक	अनुपमा शर्मा	7
हर रूप में शिक्षक	डॉ. निशी मंजवानी	7
मैं शिक्षक हूँ	मुकेश कुमार बिस्सा	8
शिक्षा का आधार कलम है	राम नरेश 'उज्जवल'	9
शिवकुमार सर	जैन राजेंद्र गुलेच्छा 'राज'	9
पुस्तक ज्ञान ही नहीं, ज्ञान की नानी है	डॉ. सूर्य प्रताप राव	10
ग़ज़ल	हिमांशु व्यास	10
साजिश	सरोज कुमार वर्मा	10
देवोपम है हिन्दी	उद्देश्य तिवारी 'उदय'	11
हिन्दी मेरी माँ	अनीता चमोली 'अनू'	11
मानवता की क्रांति ला दो	विरेन्द्र सिंह कौशल	12
हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा	हरदेव सिंह धीमान	12
सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं...	आशा जाकड़	13
एक दीपक से जलते हजार दीपक	शंकर घनशामदास अंदानी	13
लेख/कहानी		
अनमोल गिफ्ट (लघुकथा)	संजय कुमार गिरि	14
एआई के दौर में शिक्षकों की प्रासंगिकता	सारिका प्रीतम	15
एआई के युग में शिक्षक की भूमिका	मुकेश कुमार बिस्सा	16
शिक्षा, संस्मरण (लघुकथा)	अलका जैन आनंदी	19
युवाओं को सही शिक्षा व मार्गदर्शन...	जगदीश शर्मा सहज	20
आदर्श गुरु गढ़ते हैं आदर्श शिष्य	सरला मेहता	22
माँ की तरह (लघुकथा)	राम मूरत 'राही'	23
पिता : जीवन के शिक्षक	शिक्षा अग्रवाल	24
शिक्षक : राष्ट्र निर्माण का शिल्पकार	रेखा सिंघल	27
बच्चों में पढ़ाई के प्रति उदासीनता	रिंकी अग्रवाल 'प्राची'	29
कर्तव्य निष्ठा (लघुकथा)	लक्ष्मी कानोडिया	30
पुस्तक प्रकाशन (समत्व का पथिक)	शैली भागवत 'आस'	31
शिक्षक अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें	डॉ. राजसी केलकर	32
शिक्षक समाज का निर्माता	पूजा सक्सेना	33
सत्यपथ का मार्गदृष्टा.....शिक्षक	नलिन खोईवाल	34
एक पुस्तक हो उपहार	डॉ. सूर्य प्रताप राव	35
बदलते दौर में शिक्षक और शिक्षा...	शैली भागवत 'आस'	38
प्रतिक्रियाएँ		39
गुरु की छत्रछाया (कविता)	उद्देश्य तिवारी 'उदय'	40
नवसर्जन की चेतना (कविता)	भारती कुमार	40
अच्छे नंबर या जयादा नंबर	मित्तल टिलवा	42
काव्यशैली सदस्यगण		42



अतिथि संपादकीय

शिक्षक ही राष्ट्र या समाज की रीढ़ की हड्डी होता है। जिस देश में शिक्षक का सम्मान होता है वह देश सदैव एक महान राष्ट्र की श्रेणी में आता है माता-पिता के पश्चात अगर बाल विकास या बच्चे के भविष्य का निर्माण कोई करता है तो वह शिक्षक ही है।

बच्चों के चरित्र का निर्माण और उनमें संस्कारों का बीजारोपण और संस्कार रूपी पौधे को वृक्ष का रूप देते हुए एक शिक्षक अपने सारे सद्भाव और सद्विचार उस बच्चे में डालता है।

शिक्षक केवल विद्यार्थी को पुस्तकिय ज्ञान ही नहीं देता है बल्कि वह उसे अपनी शिल्पकला से एक अद्भुत रूप देने का प्रयास करता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी,जो महान शिक्षाविद और दार्शनिक रहे हैं, उनकी जयंती के अवसर पर ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य शिक्षकों को उचित सम्मान देना है। वैसे तो हमारे देश में पहले से ऋषि मुनियों और गुरुओं को ईश्वर के बाद उन्हें ही माना जाता है लेकिन समय के साथ समाज में परिवर्तन आए हैं।

जबकि माता-पिता की भांति शिक्षक सदैव अपने विद्यार्थियों का भला ही चाहता है और उन्हें अम्बर तक पहुंचते देखना चाहता है।

बदलते हुए परिवेश में शिक्षक, पुस्तकों, गतिविधियों, नृत्य, गायन, नाटिका अन्य कलाओं की शिक्षा देकर उनकी योग्यता बढ़ाने में सहयोगी है। स्मार्ट कक्षा हो या डिजिटल प्लेटफॉर्म के द्वारा शिक्षक हर तरह की जानकारी उपलब्ध करा रहा है।

प्रतियोगिता के दौर में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना, उन्हें अवसाद से बचाना, सही निर्णय लेने में सहायता करना, किस क्षेत्र में विद्यार्थी अपने को आगे बढ़ा सकता है अर्थात विद्यार्थी की रुचि, उसकी सामर्थ्य का आंकलन कर उसको उचित मार्गदर्शन देना।

आज के समय में अभिभावकों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। उनको यह मानना होगा कि जैसे उन्हें उनका बच्चा प्यारा है और वे उन्हें आगे बढ़ते देखना चाहते हैं ऐसा ही शिक्षक भी विद्यार्थियों से उतना ही स्नेह रखते हैं और वे भी उन्हें आगे बढ़ते देखना चाहते हैं।

अभिभावक और शिक्षक दोनों मिलकर ही बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। दोनों को अपना-अपना किरदार ईमानदारी से निभाने की जरूरत है।

शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों को हृदय तल की गहराई से प्रणाम है। जो विद्या के मन्दिर में आने वाले भविष्य की नींव रखते हैं।

शिक्षक के लिए सबसे बड़ा उपहार और सम्मान होता है उसके विद्यार्थी की उन्नति, सफलता और जो सम्मान विद्यार्थी समाज और राष्ट्र से पाता है।

अंत में -

हर शिक्षक को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम है साथ ही हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

काव्यशैली के इस अंक में प्रकाशित सभी कलमकारों का हार्दिक अभिनन्दन, वंदन।

-संगीता अहलावत
सह संपादक

मैं हूं गणेश

मैं हूं गणेश मेरे पिता महेश
और पार्वती मेरी माता है।
पूजा होती जब देवों की
प्रथम मुझे ही पूजा जाता है।
विघ्न विनाशक हूं मैं जग में
इसी नाम से जाना जाता हूं।
आगमन होता धरती पर जब
घर घर मै पूजा जाता हूं।
पूजा होती उत्साह से मेरी
भक्त ढोल नगाड़े बजाते हैं।
जाता जिस घर मै मेहमाँ बनकर
उसे दुल्हन सा सजाते हैं।
मेरी आरती और गायन से
मुझे मनाया जाता है।
तरह-तरह के व्यंजन बनाकर
मुझे भोग लगाया जाता है।
लेकिन होता जब मेरा विसर्जन
नदियों में डुबाया जाता है।
ऊंची ऊंची जगह से मुझको
निर्ममता से गिराया जाता है।
अंग अंग टूट कर तब मेरा
मेरी मां की गोद में समाता है।
मुझको देख इस विकृत रूप में
मेरी मां का दिल भर आता है।
मैं भी जाता जब गोद में मां के
वहां कूड़े में दब जाता हूं।
अपनी मां की ये दुर्दशा देखकर
विचलित मै हो जाता हूं।
मां गंगा का बेटा हूं मैं
दुर्दशा उसकी न सह पाऊंगा।
विघ्न विनाशक हूँ मै जग मे
पर मैं तो विघ्न मचाऊंगा।
भव्य रूप छलावा तुम्हारे मन का
मैं सूक्ष्म रूप में भी आता हूं।
जो स्वच्छ रखें मेरी गंगा मां को
मैं विघ्न उसके हर जाता हूं।



अनीता चमोली 'अनू'
देहरादून (उत्तराखंड)

ग़ज़ल

मुश्किल को आसान बनाते हैं शिक्षक
बंजर में भी फूल खिलाते हैं शिक्षक

मिट जाते हैं लाइल्मी के अँधियारे
इल्मो फ़न के दीप जलाते हैं शिक्षक

जीवन में उलझन चाहे कितनी आएँ
हर हालत में फ़र्ज़ निभाते हैं शिक्षक

दुश्वारी में भी हँसकर करते हैं काम
दिल में अपना दर्द छुपाते हैं शिक्षक

जिसको पाने से मुस्तक़बिल बनता है
दौलत वो अनमोल लुटाते हैं शिक्षक

शागिर्दों को राहबरी करके अक्सर
ऊँचे शिखरों पर पहुँचाते हैं शिक्षक

पहले करते मुश्किल से आगाह 'रशीद'
फिर मंज़िल की राह दिखाते हैं शिक्षक



रशीद अहमद शेख़ 'रशीद'
इंदौर



हिन्दी हमारा स्वाभिमान

भारत में प्रचलित है हिन्दी,
जन-जन की मीत है हिन्दी।
बिन हिन्दी कुछ नहीं चलता,
भेद हिन्दी में कुछ नहीं रहता ॥

विदेश में हिन्दी शान से पहुंची,
हिन्दी की सरलता मान से पहुंची।
दिगर भाषा सरल सहज नहीं है,
संस्कृत की बेटी है हिन्दी ॥

हिन्दी सिखना हरकोई चाहे,
हिन्दी की चाह में विश्व बुलाये।
हिन्दी प्रचलित आदि काल से,
हिन्दी सजी है देखभाल से ॥

हर प्रांत में हिन्दी सब बोले,
हिन्दी केवल मिश्री घोले।
हिन्दी स्वयम स्वावलंबी है,
लगती नहीं हिन्दी दम्भी है ॥

हिन्दी का हम मान बढाएँ,
जन-जन तक इसको पहुँचाएँ
हिन्दी हमारा स्वाभिमान है,
करते इसका सब बखान हैं ॥



डॉ.कृष्णा जोशी
इन्दौर मध्यप्रदेश



एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता

शाला का आँगन छूटे चाहे,
पर शिक्षा का पथ नहीं छूटता।
समय कहे—"अब विश्राम करो",
पर शिक्षक कभी नहीं रुकता।
वह केवल पाठ नहीं पढ़ाता,
जीवन का अर्थ सिखाता है।
हर गिरते हुए नन्हे मन को,
आत्मविश्वास दिलाता है।
उसकी वाणी वर्षों बाद भी,
शिष्यों के मन में गूँजती है।
उसकी दी सीख सफलता बन,
जीवन-राह को पूजती है।
चॉक भले ही हाथ से छूटे,
पर अनुभव की श्वेत रेखाएँ,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी लिखती रहतीं,
कर्तव्य, संस्कारों की कथाएँ।
सेवानिवृत्ति तन की होती,
मन का दीपक कब बुझता है?
जिसने जीवन गढ़ना सीखा,
वह जीवन भर गुरु रहता है।
जब-जब कोई शिष्य सफल हो,
उसकी आँखें भर आती हैं;
यही कमाई, यही विरासत,
गुरु की सच्ची थाती है।
सम्मान नहीं पद से मिलता,
आचरण से मान मिलता है।
एक शिक्षक विद्यालय से नहीं,
अपने शिष्यों के हृदय में निवास करता है।
इसीलिए—
एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता
वेतन, पद, सम्मान सभी,
समय के संग मिट जाते हैं।
पर सच्चे गुरु के बोए बीज,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी फल जाते हैं।
जिसने अज्ञान-तम हर डाला,
वह सूरज बनकर रहता है।
विद्यालय से विदा हो जाए,
पर शिक्षक कहाँ सेवानिवृत्त होता है!



डॉ. संगीता बिंदल
पुणे

पढ़ना अच्छा रहता है

गाँव गाँव और नगर नगर ।
गली गली और डगर डगर ॥
चलो, सभी मिलकर जायें ।
मिलकर सबको समझायें ॥
अनपढ़ रहना ठीक नहीं ।
अनपढ़ की कब पूछ कहीं ॥
जो अनपढ़ रह जाता है ।
जीवन भर पछताता है ॥
लड़का हो या लड़की हो ।
चलो, सिखायें सब ही को ॥
हर कोई यह कहता है ।
पढ़ना अच्छा रहता है ॥
बिना-पढ़ा पछताता है ।
पढ़ा-लिखा सुख पाता है ॥
मिलकर विद्यालय जायें ।
पढ़ लिख कर सब सुख पायें ॥



त्रिलोक सिंह ठकुरेला
हाथरस (उ. प्र.)

शिक्षा और शिक्षक

विद्यालय में, गुरुजनों का,
सर्वोपरि स्थान ।
छात्र बिना गुरु-गुरु नहीं,
गुरु बिना नहीं ज्ञान ॥
गढ़ता गुरु शिष्य को,
मार-मार कर चोट ।
निखर-निखर जाता हृदय,
बिखर जाता सब खोट ॥
पहले हृदयंगम करें,
सभी छात्र व्यवहार ।
समता लक्षित देखकर,
गुरु को करते प्यार ॥
चतुर्मुखी विकास हो,
गुरु जन की यह आस ।
दूर रहें दुर्गुण सभी,
कभी ना भटकें पास ॥
जिस शिक्षा में सजगता,
संस्कार उत्साह ।
निर्भयता स्वावलंबीपन,
अनुशासन में राह ॥
स्वदेशी संस्कृति निहित,
सही दिशा का ज्ञान ।
चित्त शुद्ध मन इंद्रियाँ,
लक्ष्य बने पहचान ॥
चरित्रवान हों राष्ट्र के,
छात्र पाऐं सम्मान ।
गुरुजन, परिजन, स्वजन का,
सदा बढ़ाएं मान ॥



कृष्णा गौतम
ग्रेटर नोएडा

शिक्षा वह दीप जो बुझता नहीं

जब हाथों में खिलौने कम,
और जिम्मेदारियाँ ज्यादा होती हैं,
तब किसी बच्चे की आँखों में
एक किताब उम्मीद बनकर सोती है।
शिक्षा वही उम्मीद है,
जो अंधेरे घर में उजाला करती है,
जो खाली जेब से नहीं डरती,
जो इंसान को अपने पैरों पर खड़ा करती है।
यह सिर्फ अक्षरों को पढ़ना नहीं,
यह हालातों को पढ़ना सिखाती है,
गिरकर फिर उठना सिखाती है,
और हार में भी जीत तलाशना सिखाती है।
एक माँ की आँखों का सपना,
एक पिता की मेहनत की कहानी,
एक बच्चे की छोटी-सी चाहत—
शिक्षा बनती है उसकी नई जुबानी।
जिस हाथ में कलम आ जाती है,
वह हाथ मजबूरी में नहीं झुकता,
जिस मन में ज्ञान की रोशनी हो,
वह मन अंधेरों में नहीं रुकता।
एक बच्चा पढ़ता है,
तो केवल उसका भविष्य नहीं बदलता,
उसके साथ एक परिवार बदलता है,
और धीरे-धीरे पूरा समाज बदलता है।
क्योंकि शिक्षा वह दौलत है,
जिसे कोई छीन नहीं सकता,
वह दीप है जो एक बार जल जाए,
तो पीढ़ियों तक बुझता नहीं।



दिनेश चौहान

शिक्षा और शिक्षक

शिक्षा को जीवन कहिए
या जीवन को शिक्षा कहिए
शिक्षा जीवन का अर्थ बताती
सही गलत की राह दिखाती
जीवन का हर क्षण है शिक्षक
मिलने वाला हर जीव भी शिक्षक
हर पहला क्षण
अगले पल का है शिक्षक
जीवन का उजियारा शिक्षा
हर उद्वेग का किनारा शिक्षा
पुस्तक तो पहली सीढ़ी
बाकी के हम खुद ही शिक्षक
सज्जन तो सज्जनता सिखलाता
लेकिन धूर्त भी होता शिक्षक
विद्वान तो पाता मान सदा
लेकिन मूर्ख भी होता शिक्षक
धरा, गगन, चांद और तारे
पशु, पक्षी तक होते शिक्षक
गुरु का दर्जा, ईश्वर से ऊंचा
उनको दीजिए मान सदा
ताजीवन जो रहे विद्यार्थी
उसका बढ़ता ज्ञान सदा



अनुपमा शर्मा, रुड़की

हर रूप में शिक्षक

मानस पटल पर शिक्षा का,
पहला अंकुर जिसने बोया।
प्रथम गुरु; उस मां को मैंने,
झुककर शीश नवाया।

कभी घोड़ा कभी हाथी बन,
पीठ पर मेरा बोझ उठाया।
ज़िम्मेदारी करो हंसकर पूरी,
हार ना मानो पिता ने सिखलाया।

विद्यालय में पकड़ कलम,
अक्षर बोध कराया।
धैर्य पूर्वक मुझे शिक्षक ने,
हर एक पाठ पढ़ाया।

निरा था जीवन ज्ञान बिना,
जैसे धरा रूपहीन; वृक्ष बिना।
खाली गागर में सागर भरकर,
लहरों सा ऊँचा उठना सिखाया।

गुरू बिन नहीं है कभी भी संभव,
अपने अस्तित्व का ध्येय समझना।
मानो मूरत को गुरू सदृश भी,
तो पूरी हो शिक्षा की आराधना।

हर व्यक्ति से सीखते चलते,
गलत से सीखा बदी ना उतरना।
सज्जन से सीखा सदाचार,
उम्र ना बाधा जब ठान लो सीखना।



डॉ निशी मंजवानी
इंदौर मप्र

मैं शिक्षक हूँ

मैं शिक्षक हूँ—
सिर्फ़ किताबों के पन्ने नहीं पढ़ाता,
मैं उन पन्नों के बीच
छिपे सपनों को पढ़ता हूँ।

मैं शिक्षक हूँ—
गलत उत्तर पर
सिर्फ़ लाल निशान नहीं लगाता,
बल्कि यह भी समझाता हूँ
कि गलती अंत नहीं,
सीखने की पहली सीढ़ी है।

मेरी कक्षा में
कोई डॉक्टर बनने का सपना देखता है,
कोई वैज्ञानिक,
कोई सैनिक,
कोई कलाकार—
और कोई बस इतना चाहता है
कि उसके घर की उम्मीदें
उससे हार न जाएँ।

मैं शिक्षक हूँ,
इसलिए मेरी जेब में
सिर्फ़ चॉक और कलम नहीं,
सैकड़ों बच्चों का भविष्य रहता है।

कभी किसी बच्चे की आँखों में
आत्मविश्वास बनकर उतरता हूँ,
कभी किसी उदास चेहरे पर
मुस्कान बन जाता हूँ,
कभी डाँटता हूँ,
कभी समझाता हूँ,
और कभी चुपचाप
उसकी परेशानी सुन लेता हूँ।
मेरी उपलब्धि
कोई प्रमाणपत्र नहीं,
न कोई पदक, न सम्मान—
मेरी असली जीत तो तब होती है
जब वर्षों बाद
कोई विद्यार्थी मिलकर कहता है—
"सर, आपकी एक बात
आज भी याद है..."

तब लगता है,
मेरी आवाज़
किसी बच्चे की ज़िंदगी में
अब भी जीवित है।

मैं शिक्षक हूँ—
समय के साथ
बदलती किताबों से भी आगे
बदलते समय को पढ़ाता हूँ।

मैं चाहता हूँ
मेरे विद्यार्थी मुझसे आगे जाएँ,
मुझसे बड़ा सोचें,
मुझसे बेहतर बनें।

क्योंकि शिक्षक की सफलता
तब नहीं होती
जब शिष्य उसे पीछे छोड़ दे,
बल्कि तब होती है
जब शिष्य
उससे आगे निकल जाए।

मैं शिक्षक हूँ—
राष्ट्र का भविष्य
मेरी कक्षा में बैठता है,
और मैं हर दिन
उस भविष्य को
थोड़ा और उजला करने की कोशिश
करता हूँ।

मेरे लिए
शिक्षण नौकरी नहीं,
एक जिम्मेदारी है;
एक साधना है;
और सबसे बढ़कर—
एक ऐसा रिश्ता है
जो घंटी बजने के बाद भी
खत्म नहीं होता।

मैं शिक्षक हूँ—
और मुझे गर्व है
कि मैं भविष्य गढ़ता हूँ।



मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर



शिक्षा का आधार कलम है

शिक्षा का आधार कलम है।
जीवन का विस्तार कलम है ।।

चुप रह कर भी सब कुछ कहती
जज्बातों को ज़ाहिर करती
गीत ग़ज़ल कविता कह जाती
सबके दिल की बात सुनाती
इसका दामन थामे रहना
हाथों का श्रृंगार कलम है।
शिक्षा का आधार कलम है ।।

ज्ञान दीप को बाले रखती
नहीं किसी को अनुचित कहती
अक्षर-अक्षर लिखने वाली
मोती जैसे दिखने वाली
सच कहता हूँ इस दुनिया में
सबका साथी यार कलम है।
शिक्षा का आधार कलम है ।।

कोरे कागज़ को रंग देती
उद्वेलित मन को कर देती
परिवर्तन जीवन में लाती
जंग जीतना भी सिखलाती
बड़े-बड़े ग्रंथों को लिखती
विद्वानों का सार कलम है।
शिक्षा का आधार कलम है ।।

जिसने इसको अपनाया है
मान सदा उसने पाया है
जोड़ घटाना गुणा भाग कर
जीवन का सारा हिसाब कर
जाना है मैंने इतना बस
मानव का संसार कलम है।
शिक्षा का आधार कलम है ।।

लाल, गुलाबी, नीली, काली,
हर ताले की है यह ताली,
कठिन सवालों को हल करती,
कलुषित मन को निर्मल करती,
हर दिल में जो बहता हर पल,
उस जल की जलधार कलम है।
शिक्षा का आधार कलम है ।।

जैसे जिसके हाथ लगी ये
वैसे फूली और फली ये
किसी को फन्दे पर लटकाती
और किसी को रिहा कराती
बड़ी-बड़ी बाधाएँ कटतीं
बहुत तेज़ तलवार कलम।
शिक्षा का आधार कलम है ।।



राम नरेश 'उज्ज्वल'
लखनऊ

शिवकुमार सर

हमारे एक शिक्षक हुआ करते थे,
नाम था उनका शिवकुमार सर,
हिंदी का पिरीयड उनका होता था
हम सब विद्यार्थी करते थे उनका आदर.!

उनके पढ़ाने का ढंग सबसे अलग था,
वो हम सबसे घुल मिल जाते थे,
हँसी मजाक और रस भरी बातों से
हम सबको हिंदी के सबक़ सीखाते थे..!

कन्नड़ भाषी होकर भी वो हिंदी पढ़ाते थे,
हिंदी में नहीं था कोई भी उनका सानी,
मजबूत पकड़ थी उनकी व्याकरण पर,
हमें सीखने में नहीं आती थी परेशानी..!

वो कभी हम सबको अंताक्षरी खेलाते थे,
कभी प्रेरक कहानियाँ भी थे सुनाते,
अपने लिखे इतिहास पुरुषों के नाटक,
वार्षिक दिवस पर हमसे मंचन थे करवाते..!

शाला में और भी थे शिक्षक अनेक
पर शिवकुमार सर से सबको लगाव था,
नहीं डाँटते थे वो नहीं पिटते थे,
पर फिर भी सबपर उनका
विशेष प्रभाव था.!

स्कूल यात्रा प्रवास में वो गाइड के जैसे
ऐतिहासिक धरोहरों के कई राज बताते थे,
चाव से सुनते थे हम बातें उनकी,
वो सवालों सवालों में ही हमें समझाते थे..!

व्यावहारिक ज्ञान के साथ संस्कार भी सिखाएँ,
गुरु से कम नहीं थे हमारे शिवकुमार सर,
आज भी जब याद आते है वो हमें,
तो स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है हमारा सर..!



जैन राजेंद्र गुलेच्छा "राज"
बैंगलोर

पुस्तक ज्ञान ही नहीं, ज्ञान की नानी है

पुस्तक शब्द अपने आप में,अपार शब्दों का संकलन है,
होता था कभी हर घर में, पर ये अब हो रहा विलुप्त है!
चाहकर भी कोई नहीं है देखता,हाथ उसके मोबाइल है,
पुस्तक में कोई चमक न लुक,मोबाईल है तो स्टाईल है!

चंद शब्दों की शॉर्ट कट जानकारी,समझे वो ही ज्ञानी है,
नहीं ज्ञान है उसे "प्रताप", कि पुस्तक ज्ञान की नानी है!
नहीं हुआ कोई ज्ञानी, बिन लिए सहारे किसी पुस्तक से,
हुआ ज्ञान का चहुमुखी विकास,चाहे कोई भी विचार से!

गीता हो या रामायण, चाहे हो कोई किसी धर्म का ज्ञान,
पुस्तकें ही देती समाधान, यही है बस सौ टके का ज्ञान!
है पुस्तक ही ज्ञान, समाधान और सौ टके की बात भी।



डॉ. सूर्य प्रताप राव
रेपल्ली मुंबई

ग़ज़ल

यह किताबें ही मिरा असबाब है, मेरी कमाई है
उम्र भर बस इल्म की पूँजी ही दुनिया से जुटाई है

दौलते फ़ानी है ज़र, ज़ेवर, ज़मीं दुनिया में याँ लेकिन
इन किताबों में छिपा, इल्मों जहाने फ़िक्र स्थाई है

गौर से देखें तो जुड़वाँ तिफ़्ल से दिखते हैं ये सफ़्हे
बाज़ मौकों पर इबारत एक दूजे पर उभर आई है

तब मुकम्मल हो गई फिर इक ग़ज़ल अल सुब्ह जब हम को
दरमियाँ सफ़्हों के इक तस्वीर दिलबर की नज़र आई है

मीर,ग़ालिब को पढ़ें, मुंशी,निराला या के तुलसी को
यह ग़ुजश्ता दौर की दौलत हमें हिस्से में आई है

इक अनूठा ओ अजब, संसार है इनमें समाया सा
डूब कर देखा तो जाना, इनमें इक जन्नत समाई है



हिमांशु व्यास
इंदौर

साजिश

आखिर क्यों अब दिखाई नहीं देतीं
खिलौने की दुकान में
गेंद,गुड़िया या पतंग
और उनकी जगह टंगी होती हैं
तोप,टैंक और बंदूकें?

बच्चा टिफिन का पैसा बचाकर
खरीदता है एक बंदूक
और डराता है
मां-बाप,भाई-बहनों को
ये लोग भी डरने का स्वांग भरते हैं
बच्चे की दिलेरी पर
अभिमान करते हैं;

मगर उन्हें मालूम नहीं
यह एक गहरी साजिश है
फूल को पत्थर में बदल देने की।

क्योंकि यही नकली खिलौने
कल जब अख्तियार करेंगे
असली हथियारों के रूप
तब कहीं भी, कभी भी,बात-बिन बात
गूंजेगा एक धमाका
और हंसते-बोलते लोग
लाशों में तब्दील हो जायेंगे।



सरोज कुमार वर्मा
मुजफ्फरपुर, बिहार



देवोपम है हिन्दी

हिन्दुस्तान की जान है हिन्दी,
भारत की पहचान है हिन्दी।
जन-जन की आवाज़ है हिन्दी,
भारत का अभिमान है हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
हम सबकी पहचान है हिन्दी!

गंगा जैसी शुद्ध है हिन्दी,
माटी जैसी सोंधी है हिन्दी।
सूरज जैसी तेजस्वी है,
चाँद-सी मन को भाती हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
भारत की मुस्कान है हिन्दी!

नदियों का संगम है हिन्दी,
प्रकृति का शृंगार है हिन्दी।
शब्दों में संस्कार समेटे,
भारत का संसार है हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
संस्कृति की जान है हिन्दी!

विश्व के कोने-कोने में,
आज चमकती अपनी हिन्दी।
सीमाओं को पार कर रही,
मन से मन को जोड़ती हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
विश्व-पटल की शान है हिन्दी!

संस्कृति को दिखलाती हिन्दी,
सभ्यता को बतलाती हिन्दी।
वेदों से लेकर आज तलक,
ज्ञान की ज्योति जलाती हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
ज्ञान का वरदान है हिन्दी!

भारत के कण-कण में बसी है,
भारत के जन-जन में हिन्दी।
रिश्तों की मिठास लिए है,
माँ-सी प्यारी लगती हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
माँ-सी स्नेहिल हिन्दी!

आओ मिलकर प्रण यह लें—
मान बढ़ाएँ अपनी हिन्दी।
घर-घर में इसका दीप जलाएँ,
जन-जन तक पहुँचाएँ हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
हम सबका सम्मान है हिन्दी!

नहीं किसी से कम है हिन्दी,
नहीं किसी से हारती हिन्दी।
भारत माँ के माथे की
सबसे सुंदर शान है हिन्दी।
हिन्दी है! हिन्दी है!
हम सबका सम्मान है हिन्दी!

देवों का वरदान है हिन्दी,
शब्दों में भाव महान है हिन्दी।
पावन, सुंदर, सरल, महान—
सचमुच देवोपम है हिन्दी!
हिन्दी है! हिन्दी है!
हम सबका सम्मान है हिन्दी!



उद्देश्य तिवारी 'उदय'
सतना, मध्यप्रदेश



हिंदी मेरी माँ

माँ भारती की बेटी हूँ मैं
हिंदी मेरी शान है
धर्म और जाति से पहले
हिन्दुस्तानी मेरी पहचान है।
कई रूप मेरी हिंदी के
हर रूप मे सुन्दर लगती हैं,
एक करती है हम सबको
और सबके दिलों मे बसती है।
भोली भाली मेरी माँ हिंदी
अंग्रेजी मेहमाँ अब इसको छलती है।
हक जताती हर क्षेत्र मे अपना
इसको पीछे ही रखती है।
हो रही सबको अंग्रेजी प्यारी
हिंदी से मुँह सब मोड़ रहे
अपने ही घर के हर कोने में
अपमान हिंदी अब कैसे सहे।
भूल न जाना अपनी माँ को
अपने तो अपने होते हैं
जो करते तिरस्कार अपनों का
वो कठिन समय मे रोते हैं।
आओ मिलकर हम सब भी
हिंदी माँ का श्रृंगार करें
अपनी वाणी मे उसे बसाकर
विश्व मे विस्तार करें।
हिंदी की गरिमा के लिये हम
अंग्रेजी का बहिष्कार करें
सर्वप्रथम हिंदी को मान दें
फिर अंग्रेजी को स्वीकार करें।



अनीता चमोली "अनू"
देहरादून (उत्तराखंड)

मानवता की क्रांति ला दो

आजादी को पाकर सुकून ना लूटो लोगों का,
जान पै खेल के आजादी दी, ये देश है उन शहीदों का|
सीमा पार आतंक से तो देश को जवान बचा रहे हैं,
पर अंदर का आतंक, खून पी रहा है देशवासियों का||
देश में शांति ला दो,
मुरझाए चेहरों पै कांति ला दो|
सूखा जा रहा है शहीदों का ये चमन,
इसके लिए श्रेष्ठ कोई माली ला दो||
हिंसा, बलात्कार, धार्मिक उन्माद,
भ्रष्टाचार और भेदभाव की आग बुझा दो।
त्राहि त्राहि मची है मेरे देश में,
मुखौटों को बेनकाब करा दो ।।
नफरत मिटा दो,
मानवता की क्रांति ला दो।
आजादी पाकर भी देश में चैन अमन नहीं है,
कहीं से महात्मा बुद्ध सा ज्ञानी ला दो।
सारे जहाँ से उन्नत होना चाहते हो तो,
युवाओं को भटकाव से बचा दो।
निर्दोष लोगों की खुशियों के लुटेरों को,
देश में कड़ी से कड़ी सजा दो ।।
प्रेम मोहब्बत की कहानी ला दो,
करुणा संवेदना की रवानी ला दो।
सब की दृष्टि मदर टेरेसा जैसी हो जाए,
ढूंढ के ऐसी कोई सुरमेदानी ला दो ।।
जिन पर अपराधों के पुलन्दे पै पुलन्दे हो गए हैं,
लोग उन अपनों के मोह में भी अंधे हो गए हैं।
दूसरों को फूटी आंख नहीं देख सकते,
उनके कारनामे इतने गंदे हो गए हैं ।।
स्वभाव में वफादारी ला दो,
इंसानियत जैसी जिम्मेदारी ला दो।
निष्पक्षता खत्म होती जा रही है कौशल,
सत्ता में कोई विक्रमादित्य जैसा न्यायकारी ला दो ।।



वीरेन्द्र सिंह कौशल
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा और हिन्दी हमारी शान है,
एक सूत्र में बांधे देश को इस पर हमें अभिमान है।

साहित्य सृजन की यह भाषा स्वाधीनता संग्राम में फूली-फली
वीरों के हौसला बढ़ाने गूंज उठी हर गली गली ।

बाल वृद्ध या हो नौजवान सबके दिलो में यह अरमान,
हिन्दी बने राष्ट्र की भाषा सभ्यता का करवाए ज्ञान।

नहीं किसी से वैर वैमनस्य नहीं किसी से राग और द्वेष
सभी भाषाओ का हो सम्मान तभी खुशहाल रहेगा देश।

उर्दू, अंग्रेजी, कन्नड़, उड़िया, पंजाबी, मराठी या बंगाली
एक बगिया के फूल सभी हैं एक वृक्ष की सभी डाली।



हरदेव सिंह धीमान
शिमला

सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं, होता सच्चा ज्ञान

सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं, होता सच्चा ज्ञान।
शीश झुका करते हैं वंदन,कैसे दें प्रतिदान ।।

गुरुवर से जो हमने सीखा, किया बहुत आभार ।
धर्म- कर्म से सद्गति मिलती, गीता का ये सार ।।
प्रभु का दर्शन आप कराते,गायें मंगल गान।
शीश झुका करते हैं वंदन, कैसे दें प्रतिदान।
सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं, होता सच्चा ज्ञान ।।

कठिन समय को सरल बनाया,याद रखें उपकार।
मुश्किल राहें चलते रहना, रहना खूब उदार ।।
बंजर में भी फूल खिलाते, गुरुजी बड़े महान।
सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं, होता सच्चा ज्ञान ।।

सत्य- प्रेम की राह पकड़ना,
कभी न कर अभिमान।
त्याग- दया के पथ पर चलना,
कुल का हो यश गान ।।
गगन सदा लेना मुट्ठी में, मानवता का ध्यान ।
सच्चे सद्गुरु जब मिलते हैं होता सच्चा ज्ञान ।।

आशा जाकड़, इन्दौर



एक दीपक से जलते हजार दीपक

एक दीपक से जलते हैं, जीवन में हजार दीपक,
गुरु के ज्ञान से चमकते, अज्ञान के अंधकार में दीपक।

गुरु स्वयं जलकर जग में, ज्ञान-ज्योति फैलाते हैं,
भटके हुए हर पथिक को, मंजिल राह दिखाते हैं।

मिट्टी को आकार देकर, सुंदर मूर्ति बनाते हैं,
शिष्य के सपनों को गुरु, पंख लगाकर उड़ाते हैं।

अक्षर-अक्षर में छिपा, जीवन का सार बताते हैं,
हार मिले तो धैर्य रखो, जीत मिले तो विनय सिखाते हैं।

गुरु हैं सागर ज्ञान का, गुरु हैं निर्मल धारा,
उनके चरणों में मिलता, जीवन को उजियारा।

एक शिष्य जब आगे बढ़ता, गुरु का मान बढ़ाता है,
उसकी सफलता का हर क्षण, गुरु को याद दिलाता है।

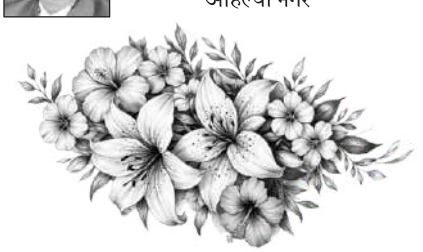
राष्ट्र निर्माण की नींव में, गुरु का योगदान महान,
उनसे ही संस्कारित होता, भारत का भावी इंसान।

हे गुरु! आपकी ज्योति से, जग सारा रोशन हो,
हर बच्चे के जीवन में, शिक्षा का सूरज उदित हो।

शिक्षक दिवस पर नमन आपको, हे ज्ञान के रखवाले,
एक दीपक से जलते हैं, सचमुच हजारों दीपक निराले।



डॉ. शंकर घनशामदास अंदानी
अहिल्या नगर



लघुकथा

अनमोल गिफ्ट



संजय कुमार गिरि

वह मेरे पसीने में भीगे कपड़ों को देखकर ऐसे नाक भों सिकोड़ रहा था जैसे कि मैं किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हूँ, शायद उसे मेरे पसीने की दुर्गंध आ रही थी। किन्तु मैं क्या करता दिनभर धूप में जी तोड़ मेहनत करता रहा था, कभी इधर तो कभी उधर सामान लेकर जाना पड़ रहा था। उस पर साहेब का गुस्सा, जैसे तैसे मैं अपना काम निपटा कर ऑफिस से जल्दी घर निकलना चाहता था। सुबह ही पत्नी से वादा जो किया था कि 20 वीं सालगिरह है, आज किसी रेस्टोरेंट चलेंगे डिनर करने।



पर काम की वजह से आज भी भाग दौड़ रोज की तरह बनी रही। 7 बजे फ्री होते ही मेट्रो पकड़ी और घर को चल दिया था। मेरे बगल में ही एक सूट बूट पहने व्यक्ति मुझे पसीने में देख अजीब-सी नजरों से घूरे जा रहा था। मैं भी अपनी जगह-जगह से घिस चुकी कमीज को उसकी नजरों से बचाता संकोच वश अपने को सिकोड़े गेट के शीशे के पास खड़ा शर्मिंदगी महसूस कर रहा था।

कश्मेरी गेट मेट्रो स्टेशन से बाहर को निकला तो ताजी हवा में थोड़ा सुकून मिला। देर होने के कारण मार्केट बंद हो गई थी और मैं पत्नी के लिए कोई गिफ्ट न ले सका। अनमने मन से जल्दी में ऑटो पकड़ घर की ओर चल दिया। घर पहुँचते पहुँचते रात्रि के 10 बज चुके थे और पत्नी दरवाजे पर खड़ी बेसब्री से मेरी राह ताक रही थी।

"सॉरी यार, मैं काम कि वजह से तुम्हारे लिए कोई गिफ्ट नहीं ला सका।" मैं बहुत ही अजीब महसूस कर रहा था।

उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं था। वह मुझसे लिपट गई।

"ये क्या जरूरी है कि हर बार तुम ही मुझे गिफ्ट दो।" मुझे एक पैकेट पकड़ाते हुए मैरिज एनिवर्सरी की बधाई दी। मैंने पैकेट खोलकर देखा तो दंग रह गया उसमें एक पिंक शर्ट और ब्लैक पेंट थे।

"सही कहती हो ...तुम्हारी पसंद बहुत अच्छी है।"

"सो तो है ...तुम्हें जो पसंद किया है।" वह मुस्कुराते हुए बोली। पत्नी को मालूम था कि पसीने की खुशबू क्या होती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के दौर में शिक्षकों की प्रासंगिकता

सारिका प्रीतम
गाज़ियाबाद,
उत्तर प्रदेश



मैं अपनी ज़िंदगी में कोई भी कार्य करूँ, लेकिन मेरी आत्मा शैक्षणिक कार्यों में बसती है। शिक्षण के नए आयाम एवं व्यावहारिक तौर-तरीके मुझे आकर्षित करते रहे हैं। विद्यार्थियों एवं प्रशिक्षुओं से विभिन्न विषयों पर चर्चा करना मेरे पसंदीदा कार्यों में से एक है। उनकी जिज्ञासु आँखें, उनके कौतूहल भरे प्रश्न एवं कुछ नया सीखने की लालसा मेरे जीवन में नया रस घोल देती हैं।

इसी प्रकार अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर अपनी बेटियों को पढ़ाना भी मुझे बेहद पसंद है। अनायास अपने बच्चों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की मदद से उनके स्कूल प्रोजेक्ट पूरे करते देख मुझे आश्चर्य हुआ। मन में विचार आया कि इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर ने मुझसे वह अवसर छीन लिया, जब मेरी बेटियाँ मुझसे विचार-विमर्श करके ही किसी प्रोजेक्ट पर काम शुरू करती थीं।

अगर उन्हें हिन्दी में कोई कविता भी लिखनी होती थी, तो दो-तीन दिनों तक वे मेरा मान-मनौवल किया करती थीं। मैं भी थोड़ा भाव खाने के बाद उनके लिए उनके स्तर की एक कविता लिख देती थी। मेरी लिखी हुई कविताओं को पढ़कर उनके मासूम चेहरों पर उभरने वाले मनोभावों को पढ़ना मुझे रुचिकर लगता था। अब वे काम भी आसानी से एवं बेहद कम समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से करवा लिए जाते हैं, जो मेरे लिए निराशाजनक है। क्योंकि यह मेरी और मेरे बच्चों की रचनात्मक क्षमता पर विपरीत असर डाल रही थीं। मैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ नहीं हूँ, लेकिन इसकी सीमाओं से अवगत होना उनके लिए अत्यंत आवश्यक है।

अब सवाल यह उठता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में शिक्षकों की क्या प्रासंगिकता है? क्या भविष्य में बच्चे इस पर पूर्ण रूप से निर्भर होने वाले हैं? ये सवाल केवल गंभीर ही नहीं, बल्कि चिंतनीय भी हैं।

आज, जहाँ प्रत्येक सूचना एवं प्रत्येक सवाल का हल विद्यार्थियों की उँगलियों



पर उपलब्ध है, वहाँ स्कूलों एवं उनमें शिक्षा प्रदान करने वालों की प्रासंगिकता पर बार-बार सवालिया निशान लगाए जाते हैं। विद्या अर्जित करने वालों का एक व्यापक वर्ग यह मानने लगा है कि हमारे देश के विभिन्न स्तरीय शिक्षण संस्थानों में लागू शिक्षा प्रणाली आज के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त नहीं है। यहाँ मैं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण तो नहीं कर रही, लेकिन इस लेख के माध्यम से यह संदेश अवश्य देना चाहती हूँ कि इस पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है।

उपरोक्त परिदृश्य में सरकार के अलावा ये शिक्षक ही हैं, जो इस देश की शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन ला सकते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के स्तर में सुधार लाते हुए यही विद्यार्थियों को यह समझा सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का कहाँ और कितना उपयोग करना है तथा इसके व्यापक उपयोग से उनके बौद्धिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। हम अब तक भाग्यशाली हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में अब तक मानवीय भावनाओं का समावेश नहीं किया जा सका है। हालाँकि, इन पर भी निरंतर प्रयोग जारी हैं। लेकिन एक शिक्षक के पास बौद्धिक क्षमता व शिक्षण कला के साथ चिंतनशील मन व भावनाएँ भी मौजूद हैं।

अतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का चाहे जितना भी विकास हो जाए, एक योग्य शिक्षक अपनी शिक्षण कला, भावनात्मक जुड़ाव एवं प्रेरक संवाद से अपने विद्यार्थियों के भविष्य को सुदृढ़ बनाने में अपनी अहम भूमिका निभा सकते हैं और सदैव निभाते रहेंगे। उन्हें बस आत्मीयता के साथ विद्यार्थियों से सतत संवाद बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है तथा भटकाव के समय सही दिशा देने की आवश्यकता है।

एआई के युग में शिक्षक की भूमिका

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर



मशीनें ज्ञान दे सकती हैं, लेकिन शिक्षक जीवन की दिशा देते हैं

कभी शिक्षा का अर्थ था—पुस्तक खोलना, शिक्षक को ध्यान से सुनना, नोट्स बनाना और परीक्षा में सीखे हुए को लिख देना । फिर इंटरनेट आया, स्मार्टफोन आया और ज्ञान हमारी उंगलियों पर आ गया। आज हम ऐसे दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई कुछ ही सेकंड में प्रश्नों के उत्तर दे सकती है, कठिन विषयों को सरल भाषा में समझा सकती है, चित्र बना सकती है, निबंध लिख सकती है, गणित के सवाल हल कर सकती है और विद्यार्थियों की सीखने की गति के अनुसार सामग्री तैयार कर सकती है।

ऐसे समय में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है—जब मशीनें इतना कुछ कर सकती हैं, तो शिक्षक की भूमिका क्या रह जाएगी?

इस प्रश्न का उत्तर शायद एआई के विकास में नहीं, बल्कि शिक्षक की वास्तविक भूमिका को समझने में छिपा है। शिक्षक केवल जानकारी देने वाला व्यक्ति नहीं है । वह विद्यार्थी के भीतर जिज्ञासा जगाता है, गलतियों से सीखना सिखाता है, निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है और सबसे बढ़कर उसे एक संवेदनशील मनुष्य बनने की दिशा देता है।

ज्ञान से अधिक जरूरी है सही दिशा

एआई के पास विशाल मात्रा में ज्ञान है, लेकिन ज्ञान और विवेक एक ही चीज नहीं हैं। किसी प्रश्न का उत्तर मिल जाना और उस उत्तर का सही संदर्भ समझ लेना अलग-अलग बातें हैं।

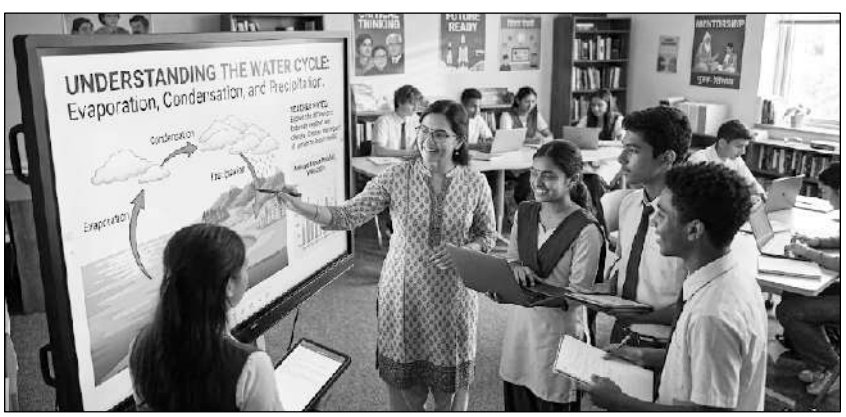
आज विद्यार्थी किसी भी विषय पर इंटरनेट या एआई से जानकारी प्राप्त कर सकता है। समस्या अब जानकारी की कमी नहीं, बल्कि सही जानकारी चुनने की क्षमता की है।

यहीं शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

शिक्षक बनेंगे ज्ञान के द्वारपाल नहीं, मार्गदर्शक

पुरानी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक ज्ञान का प्रमुख स्रोत था । विद्यार्थी को जानकारी चाहिए तो उसे शिक्षक, पुस्तक या पुस्तकालय की ओर जाना पड़ता था।

एआई के युग में यह स्थिति बदल रही है। अब शिक्षक के पास ज्ञान को अपने पास सुरक्षित रखने की आवश्यकता नहीं है। उसकी भूमिका ज्ञान के द्वारपाल से



शिक्षक विद्यार्थी से यह पूछ सकता है—

"तुमने जो पढ़ा, क्या वह सही है?"

"इसका प्रमाण क्या है?"

"क्या इसका कोई दूसरा दृष्टिकोण भी हो सकता है?"

"इस ज्ञान का वास्तविक जीवन में उपयोग कैसे होगा?"

अर्थात भविष्य का शिक्षक केवल What नहीं बताएगा, बल्कि Why और How पर अधिक जोर देगा।

बदलकर मार्गदर्शक की होगी।

एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थी को यह नहीं बताएगा कि "हर उत्तर मेरे पास है", बल्कि यह सिखाएगा कि सही प्रश्न कैसे पूछा जाए और सही उत्तर तक कैसे पहुँचा जाए।

भविष्य में संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कौशल उत्तर याद रखना नहीं, बल्कि प्रश्न पूछना होगा।

एआई शिक्षक का विकल्प नहीं, सहयोगी बन सकता है

एआई को शिक्षक का प्रतिस्पर्धी मानना उचित नहीं होगा। यदि सही ढंग से

उपयोग किया जाए तो एआई शिक्षक का शक्तिशाली सहयोगी बन सकता है।

शिक्षक एआई की सहायता से अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के लिए अभ्यास सामग्री तैयार कर सकता है । किसी विद्यार्थी को किसी विषय में कठिनाई है तो उसके लिए अतिरिक्त उदाहरण बनाए जा सकते हैं । किसी विद्यार्थी को अधिक चुनौती चाहिए तो उसके स्तर के अनुरूप प्रश्न तैयार किए जा सकते हैं।

लेकिन अंतिम निर्णय शिक्षक का होना चाहिए।

क्योंकि मशीन विद्यार्थी का उत्तर देख सकती है, लेकिन उसके चेहरे की झिझक हमेशा नहीं पढ़ सकती । वह अंक बता सकती है, लेकिन विद्यार्थी के आत्मविश्वास में आई कमी को उसी संवेदनशीलता से महसूस नहीं कर सकती।

डेटा विद्यार्थी के प्रदर्शन को दिखा सकता है, लेकिन शिक्षक विद्यार्थी के पीछे छिपे व्यक्ति को पहचानता है।

शिक्षक की सबसे बड़ी शक्ति—मानवीय संवेदना

एआई थके बिना काम कर सकता है। वह हजारों प्रश्नों के उत्तर दे सकता है। वह कभी-कभी शिक्षक से अधिक तेजी से जानकारी उपलब्ध करा सकता है।

लेकिन क्या वह उस विद्यार्थी को उसी तरह समझ सकता है जो परीक्षा में असफल होने के बाद चुपचाप अपनी सीट पर बैठा है?

क्या वह उस बच्चे की आँखों में छिपा डर पहचान सकता है जो घर की किसी समस्या के कारण पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहा?

क्या वह विद्यार्थी के भीतर छिपी प्रतिभा को केवल उसके अंकों से अलग पहचान सकता है?

यहीं शिक्षक और मशीन के बीच सबसे बड़ा अंतर है।

शिक्षक केवल मस्तिष्क को शिक्षित नहीं करता; वह मनुष्य को समझता है।

इसलिए एआई के युग में शिक्षक की सबसे बड़ी ताकत उसकी तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि उसकी मानवीय संवेदना होगी।

अब शिक्षक को भी सीखना होगा

एआई के आने के बाद केवल विद्यार्थियों को बदलने की बात करना पर्याप्त नहीं है । शिक्षक को भी निरंतर सीखने वाला बनना होगा।

यदि शिक्षक नई तकनीक से दूर रहेगा, तो वह उस पीढ़ी से पीछे छूट सकता है जिसे वह पढ़ा रहा है।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर शिक्षक को तकनीकी विशेषज्ञ बनना पड़ेगा । लेकिन उसे यह समझना होगा कि एआई क्या कर सकता है, क्या नहीं कर सकता, इसके उत्तरों की विश्वसनीयता कैसे जाँची जाए और इसका जिम्मेदार उपयोग कैसे किया जाए।

शिक्षक को विद्यार्थियों को यह भी सिखाना होगा कि एआई से प्राप्त हर जानकारी को आँख बंद करके स्वीकार न करें।

एआई साक्षरता अब डिजिटल साक्षरता का अगला चरण है।

नकल नहीं, सृजन की शिक्षा

एआई का सबसे बड़ा खतरा यह नहीं कि विद्यार्थी उसका उपयोग करेंगे । असली खतरा तब है जब विद्यार्थी सोचना बंद करके केवल एआई से उत्तर लेना शुरू कर देंगे।

यदि विद्यार्थी हर निबंध एआई से लिखवाएगा, हर गणित का प्रश्न एआई से हल करवाएगा और हर विचार एआई से प्राप्त करेगा, तो धीरे-धीरे उसकी अपनी रचनात्मकता कमजोर हो सकती है।

इसलिए शिक्षक की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है।

उसे विद्यार्थियों को यह सिखाना होगा कि एआई का उपयोग उत्तर पाने के लिए नहीं, बेहतर उत्तर खोजने के लिए करें।

उदाहरण के लिए विद्यार्थी एआई से किसी विषय पर जानकारी ले सकता है, लेकिन उसके बाद अपने अनुभव, तर्क और दृष्टिकोण को उसमें जोड़े । शिक्षक को तैयार उत्तर की जगह विद्यार्थी की सोचने की प्रक्रिया को महत्व देना होगा।

भविष्य की शिक्षा में यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण होगा—

"तुमने क्या लिखा?"

से अधिक—

"तुमने ऐसा क्यों लिखा?"

परीक्षा प्रणाली को भी बदलना होगा

एआई के युग में केवल रटकर लिखने वाली परीक्षा व्यवस्था लंबे समय तक प्रभावी नहीं रह सकती।

यदि किसी प्रश्न का उत्तर कुछ सेकंड में एआई से प्राप्त किया जा सकता है, तो केवल वही उत्तर याद करवाना शिक्षा का

उद्देश्य नहीं हो सकता।

अब मूल्यांकन में तर्क, विश्लेषण, रचनात्मकता, समस्या - समाधान, सहयोग, संवाद और वास्तविक जीवन में ज्ञान के प्रयोग को अधिक महत्व देना होगा।

शिक्षक को ऐसे प्रश्न बनाने होंगे जिनका उत्तर केवल इंटरनेट से कॉपी न किया जा सके।

विद्यार्थी से पूछा जा सकता है—

" अपने विद्यालय की किसी वास्तविक समस्या का समाधान सुझाइए।"

"आपके आसपास पानी की बचत के लिए क्या किया जा सकता है?"

"यदि आप नगर के योजनाकार होते तो यातायात की समस्या कैसे हल करते?"

ऐसे प्रश्न विद्यार्थी को मशीन से उत्तर लेने के बजाय अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए प्रेरित करेंगे।

चरित्र निर्माण की भूमिका और महत्वपूर्ण होगी

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं है । शिक्षा का उद्देश्य एक जिम्मेदार नागरिक और संवेदनशील मनुष्य का निर्माण भी है।

एआई हमें तेज बना सकता है, लेकिन यह तय करना मनुष्य का काम है कि उस गति का उपयोग किस दिशा में किया जाए।

तकनीक शक्तिशाली है । इसलिए नैतिकता भी उतनी ही मजबूत होनी चाहिए।

शिक्षक को विद्यार्थियों से ईमानदारी, जिम्मेदारी, डिजिटल शिष्टाचार, गोपनीयता, बौद्धिक संपदा और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे विषयों पर संवाद करना होगा।

भविष्य में तकनीकी रूप से सक्षम व्यक्ति बहुत होंगे; लेकिन तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग करने वाले संवेदनशील मनुष्यों की आवश्यकता उससे कहीं अधिक होगी।

शिक्षक का भविष्य खत्म नहीं होगा, बदलेगा

एआई के कारण शिक्षक की भूमिका समाप्त होने की आशंका से अधिक जरूरी है कि हम यह समझें कि उसकी भूमिका परिवर्तित होगी।

कल का शिक्षक शायद कम समय व्याख्यान देने में और अधिक समय विद्यार्थियों के साथ चर्चा, परियोजना, समस्या-समाधान और व्यक्तिगत मार्गदर्शन में लगाए।

वह पाठ्यपुस्तक का एकमात्र स्रोत नहीं होगा; वह अनेक डिजिटल संसाधनों के बीच सही दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक होगा।

वह केवल परीक्षा की तैयारी नहीं कराएगा, बल्कि विद्यार्थियों को उस दुनिया के लिए तैयार करेगा जहाँ लगातार नई तकनीकें आएंगी और उन्हें जीवनभर सीखते रहना होगा।

निष्कर्ष

एआई शिक्षा की दुनिया में एक बड़ी क्रांति लेकर आया है। यह क्रांति शिक्षक को समाप्त करने नहीं, बल्कि शिक्षक की भूमिका को नए अर्थ देने आई है।

मशीन ज्ञान दे सकती है, लेकिन विवेक नहीं बाँट सकती।

मशीन उत्तर दे सकती है, लेकिन सही प्रश्न पूछना नहीं सिखा सकती।

मशीन प्रदर्शन का विश्लेषण कर सकती है, लेकिन व्यक्ति की संभावनाओं को उसी मानवीय दृष्टि से नहीं पहचान सकती।

मशीन सूचना दे सकती है, लेकिन संस्कार नहीं दे सकती।

इसलिए एआई के युग में शिक्षक की जरूरत कम नहीं होगी; बल्कि एक अच्छे शिक्षक की जरूरत और बढ़ेगी।

भविष्य का आदर्श शिक्षक वह नहीं होगा जो एआई से प्रतिस्पर्धा करे, बल्कि वह होगा जो एआई को साधन बनाकर विद्यार्थी को स्वयं से बेहतर बनने की प्रेरणा दे।

क्योंकि अंततः शिक्षा का उद्देश्य मशीन जैसा तेज दिमाग बनाना नहीं, बल्कि तकनीक के बीच भी इंसान बने रहने वाला मनुष्य तैयार करना है।

और यही वह क्षेत्र है जहाँ शिक्षक की भूमिका किसी भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बड़ी है।



लघुकथा

शिक्षा, संस्मरण

अलका जैन आनंदी
दिल्ली



आज रमा जब से काम पर आई थी, रोई-रोई सी हो रही थी। आखिर अनीता ने पूछ लिया- क्या हुआ?? रमा कुछ उदास सी लग रही हो। रमा तो फफक-फफक कर रो पड़ी और कहने लगी-- दीदी मैं आगे पढ़ना चाहती थी पर पढ़ नहीं पाई। मेरी माँ ने शादी कर दी। पति भी ऐसा मिला शराब पीकर धूत रहता है। और मैं काम करके पैसे घर ले जाती हूँ तो वह भी शराब में उड़ा देता है। न देने पर मारपीट करता है। मैं क्या करूँ? लड़की दसवीं में आ गई है। उसकी फीस देनी है। पढ़ाने के पैसे नहीं है। रमा के पिता को पैसों का कैसे पता चल गया कि कहां रखे हैं। और वह सारे पैसे निकाल कर ले गया। अब मैं फीस कहां से भरूंगी। कल अंतिम तिथि है। अनीता ने सुना और पूछा कितनी फीस जमा करवानी है। रमा ने कहा दो हजार। अनीता ने कहा- अरे इतनी सी बात। परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। पैसे मैं अभी देती हूं। कल का दिन तो है ही। तुम फीस जमा करवाओ। अगर थोड़े बहुत पैसों की और जरूरत पड़ेगी तो मैं दूंगी। रमा ने फीस जमा करवा दी। और बेटी पेपर में पूरे विद्यालय में प्रथम आई। रमा को तो जैसे मनचाही मुराद मिल गई। और आगे की फीस में जितनी भी कमी पड़ी। तीन घर की पगार और अनीता की मदद से आगे के पेपर दिलवाए और अब आई एस की तैयारी की। डिंपल ने रात-दिन एक कर, सब का मुंह बंद करवा दिया। अपनी मेहनत के बल पर उसने दिखा दिया मनुष्य मन में विचार कर ले, तो क्या नहीं कर सकता? अनीता ने ही उसे आगे की पढ़ाई और नौकरी के साक्षात्कार के लिए पैसों व आगे के पेपर की जानकारी में सहायता की। बेटी तो इतनी होशियार निकली कि आई एस का पेपर भी पास कर लिया। सबसे अंतिम नंबर था पर पास हो गई। इस परीक्षा में पास होना किसी बड़ी लाटरी से कम न था। दो-तीन पीढ़ियों की किस्मत चमक गई मानों। अनीता के खुशी के आंसू रुक नहीं रहे थे। बेटी पास ही नहीं हुई थी। उनके पूरे खानदान को एक नई उड़ान दी थी। उनका तो जीवन ही बदल गया। एक ख्वाब पूरा किया उसकी बेटी ने।



निष्कर्ष - "शिक्षा वो कोहिनूर है, जो पत्थर को कोहिनूर बना देती है।"



युवाओं को सही शिक्षा व मार्गदर्शन आज की प्रमुख आवश्यकता

जगदीश शर्मा सहज
अशोकनगर, म. प्र.



युवा किसी भी देश का भविष्य होता है। युवा गलत दिशा में गया तो नुकसान होगा। हमारे यहाँ दो विचारधाराएं चल रही हैं एक समझाने वाली एक भड़काने वाली। युवाओं को दिग्भ्रमित होने से रोका जाए, उनकी समस्याओं का प्रारंभिक स्तर पर ही निदान किया जाए। सरकार की जवाबदेही तय हो। बच्चों को सही मार्गदर्शन देकर समझाया जाए। शिक्षा, रोजगार, भ्रष्टाचारी पर कसकर लगाम लगे। सरकारी विभागों की निष्पक्ष मोनिटरिंग कर मनमानी पर रोक लगे। आज के युवा को विकास की कम रोजगार की अधिक जरूरत है।

एक नवयुवक से चर्चा के बाद यूँ ही विचार प्रस्फुटित हुए-

"हम पुराने लोग हैं, तुम नए। हम लोग धर्मपूर्वक चलते आये हैं और कोशिश मरते दम तक यही रहेगी कि धर्म से ही चलें। हमने आचार्यों, गुरुओं, निपुण शिक्षकों का संग किया है इसलिए हमें धर्म की परिभाषा भलीभांति पता है। हम मनुष्यता में भेद नहीं मानते किंतु अपनी जाति, कुल, इष्ट, और प्रथाओं को मानने वाले हैं हम अपने पित्रों के आदर्शों पर चलने वाली पीढ़ी के लोग हैं। हम अपनी सोच किसी भी हालत में तुम पर नहीं थोप रहे न अपने विचारों को मानने के लिए बाध्य कर रहे किंतु हम अच्छी बातों को कहने लिखने से नहीं रुकेंगे। दान, पुण्य, सत्कार, विनम्रता, अहिंसा, सत्कर्म, संयम, धैर्य, वीरता, मधुरता, कला, कौशल, भक्ति, जप, तप, ध्यान, योग ये सब बातें हमें अपने समय में स्कूलों में बताई गई हैं या हमने भारतीय पुस्तकों में पढ़ी हैं। हमें इनसे विलग नहीं किया गया हमारे मन में कभी आत्महनन के विचार आज तंक नहीं आये क्योंकि हमें बताया गया कि ये पापकर्म है और इससे प्रेतयोनि मिलती है। हमें बताया गया कि गाय हमारी माता है, मात्र पशु नहीं है। हमें बताया गया कि राष्ट्रधर्म क्या होता है हमें सिर्फ खाने कमाने की शिक्षा नहीं दी जाती थी अपितु हम पुरानी पीढ़ी से संस्कार भी सीखते थे, मितव्ययता सीखते थे।हम भी अंग्रेजी पढ़े हैं हमारा किसी भी धर्म और भाषा से कोई बैर विरोध नहीं है हम आज भी अंग्रेजी लिखना, बोलना अच्छे से जानते हैं लेकिन अपनी जड़ों से कटे नहीं हैं संस्कारों से जुड़े हुए हैं। हमने बेहद



गरीब परिस्थिति में रहना सीखा है तुम उसकी कल्पना भी नही कर सकते। हम सच में पुरानी सोच के हैं और इस पर हमें गर्व है कि हमने अपने बलबूते पर पढ़ाई, रोजगार, व समृद्धि हासिल की है जिम्मेदारियां का निर्वहन किया है और आज तक निभाते चले आ रहे हैं। हमारी

'जो जस करहि सो तस फल चाखा'

जिसने भी कुकर्म किया उसे यहाँ इस लोक में तो दण्ड के रूप जेल, बीमारी, विपन्नता, शरीर का कोई अंग फैल होना अथवा घिसट-घिसट कर जीवन जीना आदि के रूप में मात्र ब्याज भुगतना पड़ता है असली सजा तो नरकों की यातना है

देखा जा रहा है कि आजकल नवयुवक, युवतियों को आधुनिक शिक्षा ने धर्म और अध्यात्म के ज्ञान से विमुख कर दिया वह लिव इन रिलेशन, काम वासना, विपरीत आकर्षण के बशीभूत होकर ऐसे घोर दुष्कर्म कर रहे हैं जो अधम कोटि के पाप हैं। मंगेतर को खाई में



सम्वेदनाएँ आज भी जिंदा हैं। हमारे समय की सम्भवतः कुछेक पीढ़ियाँ ही शेष हैं। उसके बाद आपको अपना जीवन स्वयं के तौर तरीकों पर जीना है आपको रोकने टोकने वाला कोई नहीं होगा। आप मानो या न मानो धर्म-कर्म को यह आप पर निर्भर है। आप लोग कहते हो भगवान को देखा है क्या? अरे हम कहते हैं हम परमात्मा का नित्यप्रति अनुभव करते हैं परमात्मा देखने की नहीं अनुभव की वस्तु हैं। काश आप लोग सनातन धर्म और भारतीय जीवन पद्धति से जुड़े होते तो आज यह नग्नता का प्रदर्शन और भाषाई गन्दगी समाज में व्याप्त न होती।

जहाँ सूक्ष्म शरीर यह दण्ड भुगतता है। बड़े बड़े सिद्ध संत महात्माओं को अंत समय शारीरिक ब्याधियाँ भुगतना पड़ी हैं स्वामी श्रीरामकृष्ण परमहंस जी को अंत समय गले का कैंसर था, गीताप्रेस के सम्पादक परम सिद्ध श्रीभाईजी पोद्दार उदर रोग से पीड़ित होकर दिवंगत हुए। कई सिद्ध सन्तों को क्रूर व्यक्तियों ने गड़ासे से काटकर मृत्यु के घाट उतारा। कहने का मतलब है भगवान का विधान नहीं पलटता कर्मों की सजा अवश्य भुगतना पड़ती है हाँ भगन्नाम जप कीर्तन भक्तिभाव, सत्कर्मों, प्रायश्चित्त आदि से सजा को कम किया जा सकता है।

धक्का देकर मार डालना, धर्म पति या धर्मपत्नी को कटवाकर फ्रीज में रखकर ठिकाने लगाना, प्रेमी द्वारा पति को मरवा देना ये ऐसे जघन्य अपराध तीव्र गति से समाज में घटित हो रहे हैं जिनकी परिणति ब्याज के रूप में जेल की सलाखें, रुपयों व समय का दोहन, शरीर रोग आदि तो हैं ही इसके साथ ही संस्कारभृष्ट कुछ लोग स्वयं अपने लिए रौरव नरक का टिकिट कटवा रहे हैं।

आदर्श गुरू गढ़ते हैं आदर्श शिष्य

सरला मेहता
इंदौर



"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु,
गुरु देवो महेश्वराः
गुरु साक्षात परब्रह्म:
तस्मै श्री गुरुवे नमः"

गुरु का पद तो देवों के समकक्ष है। कहा भी है आचार्य: देवो भव।

कबीर जी के अनुसार,

"गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है
गढ़ी गढ़ी काढ़े खोट "

सच, गुरु तो राह दिखाने वाला राडार है। वरना बगैर मंज़िल जाने मासूम ग़फ़लत में भटकते रहेंगे।

परमहंस ने विवेकानन्द व चाणक्य ने चन्द्रगुप्त दिए। फ़िर नारद तो ठहरे जगत गुरु, ध्रुव को नहीं मिले होते तो...।

अतः गुरु की महिमा महान है...गुरु का नित वंदन करो तो रोज़ मने गुरुवार। जहाँ तक मेरे मन्तव्य का प्रश्न है माता-पिता के बाद अगला नाम गुरु का आता है। माँ जन्म देती है, संस्कार सिखाती है तो गुरु जीवन बनाता है। शिक्षा में संस्कारों की सुगन्ध जीवन को उपवन बना देती है।

एक महत दायित्व है शिक्षक का कि सही व सत्य ज्ञान दे, मात्र पाँच घण्टे के कर्तव्य को पूरा नहीं करे। कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता, निष्ठा एवं ईमानदारी अति आवश्यक है।

एक शिक्षक मात्र अपने विषय के लिए ही जिम्मेदार नहीं है। सारे विषयों का केंद्र है नैतिक शास्त्र। इसको मद्देनजर रखते हुए छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं का भी समाधान एक काउंसलर की तरह करें।



अपने विषय पर पूर्ण अधिकार हो। सरल से क्लिष्ट की ओर जाकर दैनिक जीवन के उदाहरण देकर समझाए। मात्र पाठ्यक्रम ही नहीं पूरा करना है।

"सा विद्या या विमुक्तये"

जैसे दर्जी उचित ड्रेस सिलकर स्मार्ट बनाता है, शिक्षक बच्चे की चहुँमुखी प्रतिभा का विकास कर निखार कर उसका समूर्ण व्यक्तित्व बनाता है। विद्या विनयेन शोभते। क्योंकि विनय से ही अंततः सुख का उपार्जन होता है।

शिक्षक को निष्पक्ष होकर सभी बच्चों पर समान रूप से ध्यान देना है, चाहे वे औसत, औसत से कम या ज़्यादा हो। तुलना किसी हाल में नहीं करें। कमज़ोर बच्चों को अलग से समय दें। समय-समय पर उनके अभिभावकों से चर्चा करें।

बच्चों को ताक़ीद दें कि ध्यान से सुने समझे व याद रखे, रट्टू तोता नहीं बने। उन्हें प्रारंभ में ही हिंदी अंग्रेजी की सामान्यतः होने वाली त्रुटियों से रूबरु करवाएँ। शिक्षाकाल में सिखाया गया शुद्ध व सुंदर लेखन वे ताउम्र याद रखेंगे व शिक्षक को भी नहीं भूलेंगे।

बच्चों की ग़लत आदतों को नजरअंदाज नहीं करें।

एक शिक्षक का प्रथम कर्तव्य शिक्षा देना ही नहीं है, भावी नागरिक भी तैयार करना है। उन्हें पर्यावरण, देश आदि के प्रति भी जागरूक करें।

बच्चे एक ही तरह की वर्दी में स्कूल आते हैं यानी सब बराबर हैं, कोई भेदभाव नहीं।

हाँ, सबसे ज़रूरी बात है प्यार व ममता। छड़ी पड़े छम-छम, विद्या आए धम-धम, वाली बात नहीं चलती। अनुशासन लाज़मी है किंतु शारीरिक दंड ठीक नहीं। सजा भी सृजनात्मक हो जैसे किसी विषय पर निबंध लिखो या कोई कविता याद करो।

हर हाल में बच्चों का सर्वांगीण विकास हो। उनकी प्रतिभा पहचानकर अभिभावक को निर्देश दे।

मेरे मत में वे ही शिक्षक आदर्श हैं जिन्हें छात्र-छात्राएँ ताउम्र याद रखें भूले नहीं।

लघुकथा

माँ की तरह



राम मूरत 'राही'
इंदौर (म.प्र.)

"यार! हम सभी को मिलकर वंदना मैम की शिकायत प्रिंसीपल मैम से करना चाहिए।" सार्थक ने लंच के समय अपने दोस्तों से कहा।



"हाँ यार ! जरा-जरा-सी बात पर क्लास के सभी स्टूडेंट्स को डाँटती रहती हैं ।" आराध्य ने सार्थक की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"हाँ यार! मैं भी तुम दोनों की बातों से सहमत हूँ। कम से कम हमें एक बार तो प्रिंसीपल मैम से शिकायत करना ही चाहिए।" वैभव ने कहा।

"यार! मैं तुम लोगों की बातों से सहमत नहीं हूँ । मैं वंदना मैम की शिकायत के पक्ष में नहीं हूँ।" तनाय ने कहा।

"यार! हम लोगों से ज्यादा तुझे ही डाँटती रहती हैं। फिर भी तू मना कर रहा है।" सार्थक थोड़ा गुस्से में बोला।

"हाँ यार! सार्थक सही कह रहा है।" आराध्या और वैभव ने सार्थक की बात का समर्थन किया।

"यार! वे हमें हमारे भले के लिए ही तो डाँटती हैं, तो इसमें प्रिंसीपल मैम से शिकायत करने की क्या बात है? और दूसरी सबसे बड़ी बात ये है कि..." तनाय कहते-कहते रुक गया।

"सबसे बड़ी बात क्या है?" सार्थक, आराध्य और वैभव ने एक सुर में पूछा।

"यार! वे अगर हमारे साथ एक पिता जैसी सख्ती करती हैं, तो मां जैसा प्रेम भी तो करती हैं।"



पिता : जीवन के शिक्षक



शिखा अग्रवाल
देहरादून, उत्तराखंड

"प्रथम गुरु माँ होती हैं, जो संसार से परिचित कराती हैं; लेकिन पिता वह शिक्षक हैं, जो संसार में जीने का सामर्थ्य और जीवन का विवेक देते हैं।"

भारतीय संस्कृति में 'शिक्षक' का स्थान केवल कक्षा, श्यामपट्ट और पुस्तकों तक सीमित नहीं रहा। शिक्षक रूपी विद्यालय के ऐसे शिक्षक हैं, जिनकी कक्षा में पाठ्यक्रम से अधिक अनुभव और पुस्तकों से अधिक जीवन के सत्य पढ़ाए जाते हैं। उनके शब्दों से अधिक उनका आचरण हमें शिक्षित करता है और उनकी सीख समय के साथ हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है।



वह है जो अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाए, जो केवल अक्षर न सिखाए, बल्कि जीवन को समझने की दृष्टि दे। शिक्षक दिवस पर जब हम अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, तब उन अनकहे शिक्षकों को भी स्मरण करना चाहिए, जो बिना किसी उपाधि, बिना किसी वेतन और बिना किसी अवकाश के जीवन भर हमें पढ़ाते रहते हैं—हमारे पिता।

पिता केवल परिवार का भरण-पोषण करने वाले व्यक्ति नहीं होते; वे जीवन

औपचारिक शिक्षक हमें पुस्तकों का ज्ञान देते हैं, लेकिन पिता हमें उस जीवन का व्यावहारिक ज्ञान देते हैं, जो किसी पाठ्यक्रम में नहीं मिलता। बचपन में जब हम संसार को समझना शुरू करते हैं, तब पिता हमारे जीवन के प्रथम व्याख्याता बनकर सामने आते हैं।

जब पिता उँगली पकड़कर चलना सिखाते हैं, तो वे केवल कदम बढ़ाना नहीं सिखा रहे होते, बल्कि संतुलन और विश्वास का पहला पाठ पढ़ा रहे होते हैं। जब वे हमें आसपास की वस्तुओं और दुनिया से परिचित कराते हैं, तब हमारे भीतर जिज्ञासा का बीज बो रहे होते हैं।

और फिर आता है साइकिल चलाना सीखने का वह अद्भुत पाठ। पिता पीछे से सीट थामे रहते हैं और कहते हैं—"तुम चलाओ, मैं पीछे हूँ।" बच्चा आगे बढ़ता है और कुछ देर बाद जब पीछे मुड़कर देखता है, तो पिता वहाँ नहीं होते। वे बहुत पहले ही हाथ छोड़ चुके होते हैं।

यही तो एक आदर्श शिक्षक की सबसे बड़ी सफलता है—शिष्य को इतना सक्षम बना देना कि वह एक दिन बिना सहारे अपने रास्ते पर चल सके।

श्रेष्ठ शिक्षक केवल ज्ञान नहीं देते, वे व्यक्तित्व को तराशते भी हैं। पिता का शिक्षक रूप भी कभी-कभी कठोर दिखाई देता है। बचपन में पढ़ाई के समय खेलने से रोकना, समय पर सोने-जागने की सीख देना, गलती पर डाँटना या अनुशासन भंग

करने पर सख्ती करना हमें उस समय अच्छा नहीं लगता । तब लगता है कि पिता बहुत कठोर हैं।

लेकिन समय बीतने पर समझ आता है कि वह कठोरता दरअसल प्रेम का अनुशासित रूप थी।

जिस प्रकार कुम्हार कच्ची मिट्टी को आकार देने के लिए बाहर से थपकी देता है और भीतर से सहारा बनाए रखता है, उसी प्रकार पिता भी अनुशासन के माध्यम से हमारे व्यक्तित्व को मजबूत बनाते हैं।

वे सिखाते हैं कि समय का सम्मान करना चाहिए, अपने दायित्वों से भागना नहीं चाहिए और परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अपने संस्कारों और मर्यादाओं को नहीं छोड़ना चाहिए । उनका अपना जीवन ही अनुशासन का ऐसा ग्रंथ होता है, जिसे पढ़ने के लिए किसी पुस्तक की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शिक्षक दिवस पर हम उन गुरुओं को याद करते हैं जिन्होंने ज्ञान की रोशनी दी, लेकिन पिता वह शिक्षक हैं जो कई बार अपने पसीने से हमारे भविष्य का दीप जलाते हैं।

उनकी शिक्षाएँ भाषणों में नहीं, उनके कर्मों में दिखाई देती हैं । परिवार की आवश्यकताओं और बच्चों की शिक्षा के लिए वे दिन-रात परिश्रम करते हैं। जेठ की तपती दोपहर हो या कड़ाके की ठंड, वे अपने दायित्वों से पीछे नहीं हटते । उनका यह निरंतर श्रम हमें मेहनत, ईमानदारी और उत्तरदायित्व का पाठ पढ़ाता है।

पिता का त्याग भी अक्सर मौन होता है। अपनी इच्छाओं को पीछे रखकर वे बच्चों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हैं। उनकी अधूरी इच्छाएँ शायद कभी हमारी नजरों में नहीं आतीं, क्योंकि उन्होंने उन्हें अपनी मुस्कान के पीछे छिपा लिया होता है।

लेकिन जब हम बड़े होते हैं, तब समझ आता है कि हमारी छोटी-सी खुशी के पीछे उनके कितने बड़े त्याग छिपे थे।

पिता का जीवन हमें सिखाता है कि परिश्रम केवल सफलता पाने का साधन नहीं, बल्कि जिम्मेदार जीवन जीने का संस्कार है।

परीक्षा में कम अंक आने पर शिक्षक रिपोर्ट कार्ड पर लाल निशान लगा सकते हैं, लेकिन पिता अक्सर उस लाल निशान के पीछे छिपे बच्चे के मन को पढ़ लेते हैं।

जीवन में पहली असफलता चाहे परीक्षा की हो, खेल की हो या करियर की किसी चुनौती की—उस समय जब दुनिया हमारी कमियाँ गिनाने लगती है, पिता एक मजबूत वटवृक्ष की तरह हमारे पीछे खड़े दिखाई देते हैं।

वे हमेशा बड़े-बड़े सांत्वना के शब्द नहीं कहते । कभी केवल कंधे पर रखा उनका हाथ ही बहुत कुछ कह देता है—"चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह अंत नहीं, केवल एक पड़ाव है। फिर प्रयास करो।"

एक सच्चे शिक्षक की तरह पिता जानते हैं कि गिरना पराजय नहीं है । पराजय तब है, जब हम गिरकर उठने से इनकार कर दें।

वे हमें असफलता से डरना नहीं, बल्कि उससे सीखना सिखाते हैं। वे हमारे भीतर धैर्य, साहस और पुनः प्रयास करने की शक्ति जगाते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना या आजीविका कमाना नहीं है । शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य एक ऐसा मनुष्य बनना है, जो अपने मूल्यों के प्रति ईमानदार रहे।

पिता अपनी जीवन-शैली से हमें यही शिक्षा देते हैं।

वे सिखाते हैं कि छल और अन्याय से अर्जित धन भले सुविधा दे दे, लेकिन सुकून नहीं दे सकता। पसीने की एक बूंद से अर्जित रोटी में जो संतोष है, वह किसी वैभव में नहीं।

वे बताते हैं कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, अपने स्वाभिमान और नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। विपत्तियों के समय उनका शांत और स्थिर चेहरा हमें सिखाता है कि घबराहट नहीं, विवेक ही संकट का समाधान खोज सकता है।

यही वह शिक्षा है, जो किसी परीक्षा की उत्तर-पुस्तिका में नहीं लिखी जाती, लेकिन जीवन की हर परीक्षा में हमारे काम आती है।

पिता और संतान के संबंध में समय के साथ एक सुंदर परिवर्तन आता है । बाल्यावस्था में जो पिता हमें नियम और अनुशासन सिखाते हैं, वही धीरे-धीरे हमारे मार्गदर्शक और मित्र बन जाते हैं।

बचपन में उनकी डाँट हमें कठोर लगती है, लेकिन युवावस्था में वही

आवाज सलाह बन जाती है। जब हम नौकरी, रिश्तों, निर्णयों और जीवन की जटिलताओं के बीच उलझते हैं, तब पिता की वर्षों पुरानी सीख हमारे लिए दीपक बन जाती है।

कभी चाय की चुस्कियों के बीच वे अपने अनुभवों की गठरी खोलते हैं और बिना किसी उपदेश के जीवन का सार समझा जाते हैं। वे बताते हैं कि कहाँ झुकना विनम्रता है और कहाँ खड़े रहना स्वाभिमान; कहाँ मौन रहना समझदारी है और कहाँ सत्य के पक्ष में आवाज उठाना आवश्यक है।

यही पिता का शिक्षक रूप है—जो समय के साथ बदलता है, लेकिन अपनी सीख की प्रासंगिकता कभी नहीं खोता।

आज शिक्षा के बदलते स्वरूप में ज्ञान तक पहुँचने के साधन बहुत बढ़ गए हैं। तकनीक ने सीखने के नए द्वार खोल दिए हैं, लेकिन जीवन के मूल्यों की शिक्षा आज भी मनुष्य से मनुष्य तक ही पहुँचती है।

पिता हमारे ऐसे शिक्षक हैं, जिनकी गुरुदक्षिणा किसी धन से नहीं दी जा सकती।

उन्होंने अपने सुखों को पीछे रखकर हमारे भविष्य की नींव रखी। अपनी उँगली थामकर हमें रास्ता दिखाया। अपनी डाँट में भी हमारा हित रखा। अपनी असफलताओं को छिपाकर हमें सफलता का अवसर दिया और अपने संस्कारों से हमें समाज में सिर उठाकर जीने का साहस दिया।

शिक्षक दिवस पर जब हम अपने विद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षकों का आभार व्यक्त करें, तब उस शिक्षक को भी स्मरण करें, जिसकी कक्षा घर से शुरू हुई और जिसकी शिक्षा जीवन भर चलती रही।

वह शिक्षक—हमारे पिता हैं।

पिता एक ऐसे कालातीत शिक्षक हैं, जिनकी दी हुई शिक्षा समय के साथ पुरानी नहीं पड़ती। दुनिया बदलती है, तकनीक बदलती है, परिस्थितियाँ बदलती हैं, बात अचानक स्मृति में उजाला कर देती है। उनका कोई वाक्य, कोई अनुभव या उनका कोई संस्कार हमारे भीतर मार्गदर्शक बनकर खड़ा हो जाता है।

वे भले ही हर पल हमारे साथ न रहें, लेकिन उनकी सीख हमारे भीतर एक अनंत शिक्षक की तरह जीवित रहती है।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।



लेकिन सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, धैर्य, परिश्रम और करुणा के वे पाठ कभी अप्रासंगिक नहीं होते, जो पिता अपने जीवन से सिखाते हैं।

जीवन के किसी मोड़ पर जब हम अकेले खड़े होते हैं और रास्ता दिखाई नहीं देता, तब पिता की कही कोई पुरानी

जिसने अज्ञान के अंधकार में ज्ञान का दीप जलाकर हमारी आँखें खोलीं, उस पिता रूपी शिक्षक को शत-शत नमन।

शिक्षक : राष्ट्र निर्माण का शिल्पकार

रेखा सिंघल
उत्तराखंड



शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह प्रकाश है, जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करके उसे ज्ञान, विवेक और संस्कार की राह दिखाता है। शिक्षा केवल पुस्तकों में लिखे अक्षरों को पढ़ना या परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली वह शक्ति है, जो उसे सही और गलत में अंतर करना सिखाती है। शिक्षा मनुष्य को संवेदनशील, विवेकशील, अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक बनाती है। इस महान कार्य को दिशा देने वाला व्यक्ति है—शिक्षक । इसलिए शिक्षक को केवल पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य का शिल्पकार कहा जाता है।

एक बच्चे के जीवन में माता-पिता के बाद शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । बच्चा जब विद्यालय की दहलीज पर कदम रखता है, तब वह केवल किताबें पढ़ने नहीं आता, बल्कि जीवन को समझने की पहली व्यवस्थित यात्रा शुरू करता है। शिक्षक उसके हाथ में केवल पुस्तक नहीं देता, बल्कि उसके भीतर सपनों को जन्म देता है, उन सपनों को दिशा देता है और उन्हें साकार करने का विश्वास भी जगाता है।

शिक्षक बच्चों के व्यक्तित्व की नींव मजबूत करता है । जिस प्रकार किसी भवन की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों के संस्कारों और चरित्र पर निर्भर करता है। शिक्षक बच्चों में सत्य, अनुशासन, ईमानदारी, परिश्रम, करुणा, सहिष्णुता, सहयोग और राष्ट्रप्रेम जैसे संस्कारों का बीजारोपण करता है। वह उन्हें सिखाता है कि सफलता केवल स्वयं आगे बढ़ने का नाम नहीं, बल्कि दूसरों को भी आगे बढ़ाने का नाम है।

एक सच्चा शिक्षक बच्चे की प्रतिभा को पहचानता है । हर बच्चा एक जैसा



नहीं होता। किसी में पढ़ाई की प्रतिभा होती है, किसी में कला की, किसी में खेल की, किसी में नेतृत्व की और किसी में रचनात्मकता की। शिक्षक इन छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें निखारने का प्रयास करता है। वह कमजोर विद्यार्थी का हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ाता है और प्रतिभाशाली विद्यार्थी को अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है।

शिक्षक की भूमिका केवल कक्षा तक सीमित नहीं होती। वह बच्चों को जीवन की छोटी-छोटी परिस्थितियों से सीखना सिखाता है । असफलता मिलने पर निराश न होना, कठिनाइयों से घबराना नहीं, गलतियों से सीखना और निरंतर प्रयास करते रहना—ये जीवन के वे पाठ हैं, जो किसी पाठ्यपुस्तक में पूरी तरह नहीं मिलते। शिक्षक अपने व्यवहार और मार्गदर्शन से इन मूल्यों को बच्चों के जीवन का हिस्सा बनाता है।

एक शिक्षक कदम-कदम पर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है । जब विद्यार्थी किसी प्रतियोगिता में भाग लेता है, शिक्षक उसका उत्साह बढ़ाता है । जब वह

असफल होता है, शिक्षक उसे फिर से प्रयास करने की प्रेरणा देता है। जब वह सफलता प्राप्त करता है, तो शिक्षक की खुशी कई बार विद्यार्थी की खुशी से भी बड़ी होती है। यही शिक्षक के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है—वह अपने विद्यार्थियों की सफलता में अपना भविष्य देखता है।

शिक्षक के लिए विद्यार्थी केवल रोल नंबर नहीं होते । वे उसके सपनों का विस्तार होते हैं। वह चाहता है कि उसके बच्चे उससे आगे निकलें, ऊँचाइयों को छुएँ और समाज में अपना सम्मानजनक स्थान बनाएँ । एक डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कलाकार, सैनिक, प्रशासक, लेखक या समाजसेवी जब सफलता के शिखर पर पहुँचता है, तो उसके पीछे कहीं न कहीं किसी शिक्षक की मेहनत, प्रेरणा और विश्वास की छाप अवश्य होती है।

शिक्षक समाज को सभ्य बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । सभ्यता केवल आधुनिक सुविधाओं से नहीं बनती; सभ्यता विचारों, व्यवहार और संस्कारों से बनती है। यदि व्यक्ति शिक्षित होकर भी दूसरों का सम्मान करना नहीं जानता, प्रकृति की रक्षा नहीं करता, अपने कर्तव्यों को नहीं समझता और समाज के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो उसकी शिक्षा अधूरी है । शिक्षक बच्चों को ज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों से जोड़ता है और उन्हें एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए तैयार करता है।

एक शिक्षक बच्चों में नागरिक चेतना भी विकसित करता है । वह उन्हें अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का महत्व समझाता है । देश के संविधान, राष्ट्रीय प्रतीकों, पर्यावरण, सार्वजनिक संपत्ति और सामाजिक सद्भाव के प्रति सम्मान की भावना पैदा करता है। वह समझाता है कि अच्छा नागरिक वही है, जो अपने परिवार और अपने हित से आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के हित के बारे में भी सोचता है।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आज की कक्षा में बैठे बच्चे ही कल देश की बागडोर संभालेंगे। आज जिन बच्चों को शिक्षक सत्य और ईमानदारी का पाठ पढ़ा रहा है, उनमें से कोई कल प्रशासन चलाएगा, कोई विज्ञान के क्षेत्र में नई खोज करेगा, कोई समाज की सेवा करेगा और कोई देश की सीमाओं की रक्षा करेगा। इसलिए शिक्षक का प्रत्येक शब्द और प्रत्येक संस्कार भविष्य के भारत को आकार देता है।

शिक्षक स्वयं भी निरंतर सीखता रहता है। बदलते समय के साथ शिक्षा के तरीके बदलते हैं, तकनीक बदलती है और विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ भी बदलती हैं। एक जागरूक शिक्षक स्वयं को समय के अनुरूप विकसित करता है, नई जानकारी ग्रहण करता है और अपने विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान के साथ अपनी संस्कृति और मूल्यों से भी जोड़े रखता है।

सबसे सुंदर बात यह है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय स्वयं लेने के बजाय उन्हें आगे बढ़ते देखकर संतुष्ट होता है। विद्यार्थी जब वर्षों बाद अपने शिक्षक के पास लौटकर कहता है—"गुरुजी, आपने जो सिखाया, वही मेरे जीवन की राह बना," तब शिक्षक के लिए इससे बड़ा पुरस्कार शायद कोई नहीं होता । उसके लिए विद्यार्थी की सफलता ही उसकी सच्ची उपलब्धि और उसकी तपस्या का फल होती है।

वास्तव में शिक्षक एक दीपक की तरह है, जो स्वयं जलकर दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाता है । वह ज्ञान देता है, संस्कार देता है, दिशा देता है और आत्मविश्वास जगाता है। वह केवल एक विद्यार्थी का भविष्य नहीं बनाता, बल्कि उसके माध्यम से एक परिवार, एक समाज और अंततः पूरे राष्ट्र के भविष्य को प्रभावित करता है।

अतः शिक्षा को राष्ट्र की आत्मा और शिक्षक को राष्ट्र निर्माण का शिल्पकार कहना बिल्कुल उचित है । एक अच्छे शिक्षक के हाथों में केवल चॉक और किताब नहीं होती, बल्कि आने वाली पीढ़ी का भविष्य होता है। उसके शब्दों में प्रेरणा, उसके व्यवहार में संस्कार और उसके प्रयासों में राष्ट्र निर्माण की शक्ति होती है।

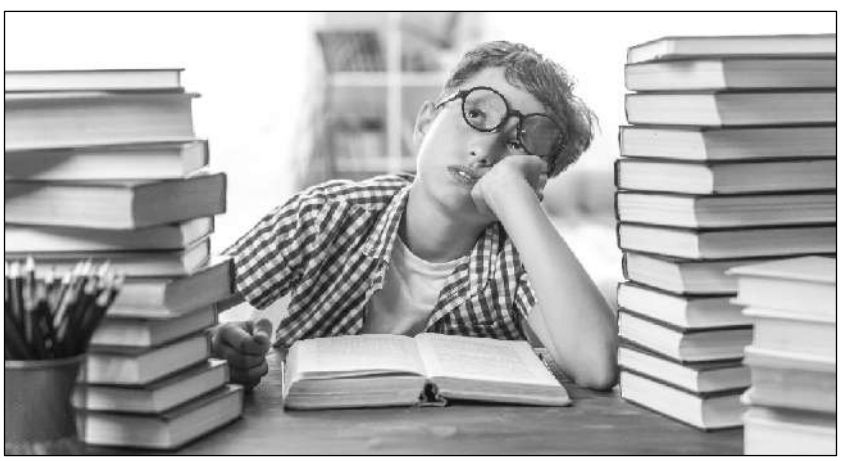
शिक्षक वह महान व्यक्तित्व है, जो स्वयं पीछे रहकर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ते देख प्रसन्न होता है। उसकी सबसे बड़ी जीत तब होती है, जब उसका विद्यार्थी उससे भी ऊँचा उठता है। ऐसे ही शिक्षक समाज को संस्कारित, सभ्य और समर्थ बनाते हैं तथा एक सशक्त, संवेदनशील और श्रेष्ठ राष्ट्र की नींव रखते हैं।

बच्चों में पढ़ाई के प्रति उदासीनता

रिंकी अग्रवाल 'प्राची'
खुर्जा बुलंदशहर



वर्तमान समय में जहां शिक्षा के विस्तार के लिए निरंतर विकासोन्मुख कार्य किये जा रहे है। वहीं एक नई समस्या शिक्षा के संदर्भ में उत्पन्न हो रही है। आज का बालक पढ़ने के प्रति उदासीन होता जा रहा है।



बच्चे को एक चलन के तहत तैयार कर स्कूल तो भेज दिया जाता है किन्तु उसे जबरदस्ती सिखाया या पढ़ाई के प्रति बाध्य नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार आप घोड़े को तालाब तक खींचकर तो ले जा सकते है लेकिन उसे पानी पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। विद्यार्थी जब तक पढ़ने के लिए लालायित नहीं है आप उसे कुछ भी नहीं पढ़ा सकते।

इसीलिए अध्यापक का सर्वप्रथम कर्तव्य बनता है, विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करना। थॉमसन ने भी कहा है "अध्यापक का सर्वप्रथम कार्य विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करना है।"

केली कहते हैं, " सीखने की कुशल कला में प्रेरणा एक केन्द्रीय कारक है। सभी प्रकार के अधिगम में किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा का होना आवश्यक हैं।"

किन्तु यहां प्रश्न यह उठता है कि आज का विद्यार्थी क्यों पढ़ने में रूचि खोता जा रहा है? इस सम्बंध में अनेक तर्क दिये जा सकते हैं। सर्वप्रथम तो मैं यह कहना चाहूंगी कि एक समय था जब शिक्षक का स्थान ईश्वर के समकक्ष माना जाता था वही आज का शिक्षक अपनी प्रतिष्ठा खोता जा रहा है। शिक्षा निरंतर व्यवसायपरक होती जा रही हैं। आज लोग शिक्षक इसलिए बनना चाहते है कि उन्हें इस व्यवसाय में रुचि है बल्कि इसलिए बनना चाहते हैं कि किसी अन्य व्यवसाय में उनका चयन नहीं हो सका।

अब ऐसे में शिक्षक जब खुद प्रेरित नहीं है तो वह छात्रों को क्या प्रेरित करेगा? दूसरी समस्या आती है कि माता-पिता में आकांक्षाएं बढ़ती जा रही है। आज वर्तमान समय में माता-पिता अपने व्यवसाय में आत्मसंतुष्टि प्राप्त नहीं करते हैं। तो अपनी आकांक्षाओं की संतुष्टि अपने बच्चों पर थोपकर प्राप्त करना चाहते है।

बच्चा स्वयं बचपन में ना जी कर माता पिता की बढ़ती आकांक्षाओं की पूर्ति करने के चक्र में निरंतर फँसता चला जाता है। उसके ऊपर अतिरिक्त भार बढ़ता चला जाता है।

एक नई मुख्य समस्या है बस्ते के बढ़ते बोझ की समस्या वर्तमान समय मे बढते कान्वेंट स्कूल जहां पैसे से जेब निरंतर भर रहे है वहीं बच्चे पर बस्ते का बोझ बढ़ाते जा रहे हैं। आज के बच्चों को मशीन की तरह प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीनकाल में भारतीय शिक्षा की विचारधारा जहां प्राकृतिक वातावरण में प्रवाहित हुई वहीं आज कुछ स्कूलों का रूप दो तीन कमरों के छोटे-छोटे मकानरूपी स्थानों ने गृहण कर लिया है। बड़े-बड़े विद्यालय मल्टी स्टोरी हो गए हैं। जहां बच्चा भारी-भारी बैग लेकर चढ़ता और उतरता ही रहता है।

ऐसे ही अनेक छोटे-छोटे कारण विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति अरुचि उत्पन्न कर रहे हैं। अगर हम सब इन उपर्युक्त तथ्यों पर विचार करें और इनका निवारण करें। यदि बच्चों को कल का भविष्य मानकर शिक्षा प्रदान की जाये तो हर निरंतर वर्तमान में बढ़ती इस समस्या से मुक्ति पा सकेंगे।

शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में संस्कारोंको रोंपना भी बहुत जरूरी है।

कर्तव्य निष्ठा



लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा (बुलंदशहर), उत्तरप्रदेश

हम तीन भाई बहन हैं। मैं अपने घर में सबसे छोटी हूं। इसीलिए मैं लाडली भी हूं क्योंकि पहले हम पंजाब में रहते थे वहां पर बच्चों को कम उम्र में पढ़ने बैठा दिया जाता है। जहां हम अब रहते हैं वहां पर बच्चों को लेट पढ़ने बैठाया जाता है। इसलिए मेरी क्लास के सभी बच्चे उम्र में व कद में मुझसे सभी बड़े थे। मेरे पिताजी शिक्षक है जिस स्कूल में मैं पढ़ती हूं स्कूल में मेरे पिताजी भी पढ़ाते थे। मेरे पिताजी हमारे ही क्लास के क्लास टीचर थे। वह हमें हिंदी पढ़ाया करते थे।



एक बार की बात है परीक्षा का समय पास आ गया था। मेरी क्लास के बच्चों ने मुझसे कहा कि तुम्हारे पिताजी ने जो हिंदी का पेपर बनाया है तुम उसको पढ़कर आना और हमें आकर बता देना कि उसे पेपर में कौन-कौन से प्रश्न दिए हुए हैं। फिर हम उसी के अनुसार अपने पेपर की तैयारी करेंगे। हमें अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मैं छोटी थी मुझे समझ नहीं थी। इसलिए मैंने उनको हां कर दिया कि हां मैं आपका यह काम अवश्य कर दूंगी। मैं अपने पापा के कमरे में गई। वहां मैंने देखा की मेज पर कुछ कागज रखे हुए हैं जिन में हमारा हिंदी का पेपर भी था। मैंने उस पेपर को अच्छी तरीके से पढ़ लिया एवं आकर अपने क्लास के बच्चों को बता दिया।

अब वह दिन भी आ गया जिस दिन हमारा हिंदी का पेपर था। सब ने देखा कि पेपर मेरे बताए पेपर के अनुसार बिल्कुल विपरीत था। परीक्षा के बाद बच्चों ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि जो तुमने बताया था पेपर तो उससे बिल्कुल ही विपरीत है और वे लोग मुझे मारने पीटने लगे। मैं भी हैरान थी कि ऐसा कैसे हो गया। फिर मैं घर आई मैंने अपने पिताजी को सारी घटना बताई तो उन्होंने मुझे कहा कि बेटा जब तुम पेपर देखकर जा रही थी तब मैंने तुम्हें देख लिया था मुझे तभी शक हो गया था। मैंने तभी पेपर को बदल दिया था।

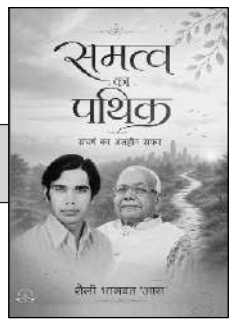
बेटा शिक्षकों की बहुत बड़ी जिम्मेवारियां होती हैं। हम अपना बनाया हुआ पेपर किसी को भी नहीं बताते जिससे पेपर लीक ना हो। हमें अपना कार्य पूरी ईमानदारी एवं कर्तव्य निष्ठा से करना होता है।

मैं अपने पिता की ईमानदारी व निष्ठा के आगे नतमस्तक हो गई। तब से मैंने निर्णय ले लिया कि मैं अपना सभी कार्य ईमानदारी एवं कर्तव्य निष्ठा से करूंगी।

पुस्तक प्रकाशन

'समत्व का पथिक'

लेखिका : शैली भागवत 'आस'



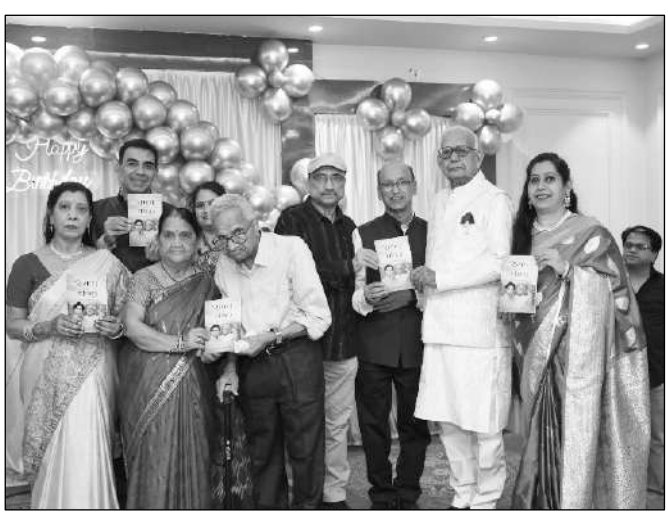
पुस्तक 'समत्व का पथिक' का गरिमामय लोकार्पण

राजधानी भोपाल में ।0 सितंबर गुरुवार को लेखिका शैली भागवत 'आस' द्वारा लिखित पुस्तक 'समत्व का पथिक' का गरिमामय लोकार्पण संपन्न हुआ। यह पुस्तक लेखिका ने अपने पूज्य पिता श्री आर. डी. शर्मा,रिटायर्ड वरिष्ठ प्रबंधक स्टेट बैंक, के संघर्षमय जीवन और उनकी प्रेरणादायी जीवन यात्रा को समर्पित की है।

कार्यक्रम का आयोजन भोपाल में वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार कुमार अंबुज एवं बैंक कर्मचारियों के रिटायर्ड समूह 'उमंग परिवार' की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। पिता के 75वें 'अमृत जन्मोत्सव' पर बधाई समारोह में मुख्य अतिथि वरिष्ठ लेखक कुमार अंबुज ने पुस्तक का विमोचन करते हुए लेखिका शैली भागवत और उनके पिता को उनके अमृत जन्मोत्सव के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि एक बेटी द्वारा अपने पिता के जीवन संघर्षों को इस प्रकार सहेजना और उनके अमृत जन्मोत्सव पर यह कृति भेंट करना बेहद अनुकरणीय और भावुक क्षण है।



पुस्तक पर चर्चा करते हुए उपस्थित रिटायर्ड बैंक कर्मियों ने कहा कि 'समत्व का पथिक' पुस्तक मात्र एक जीवनी नहीं, बल्कि जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोच बनाए रखने और अटूट धैर्य रखने की एक अद्भुत प्रेरणा है। लेखिका ने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अपने पिता की जीवन यात्रा, उनके कड़े संघर्षों और उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों को पन्नों पर उतारा है। यह पुस्तक पाठकों को यह सिखाती है कि जीवन के उतार-चढ़ाव के बीच कैसे समभाव (समत्व) में जिया जा सकता है। पुस्तक में वरिष्ठ लेखक कुमार अंबुज, इंदौर के वरिष्ठ साहित्यकार हरेराम वाजपेई एवं प्रसिद्ध ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार के सुपुत्र व जाने-माने संपादक श्री आलोक त्यागी के बहुमूल्य शुभकामना संदेश शामिल हैं, जो इस पुस्तक की साहित्यिक व वैचारिक गहराई को और समृद्ध करते हैं। इस पारिवारिक एवं विमोचन कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों और 'उमंग' परिवार के सदस्यों ने लेखिका के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि अपने माता-पिता के संघर्षों को इस रूप में सहेजना नई पीढ़ी के लिए एक मार्गदर्शक का काम करेगा। कार्यक्रम के अंत में श्री आर. डी. शर्मा एवं किरण शर्मा ने उपस्थित सभी गणमान्य जनों का आभार व्यक्त किया।





शिक्षक अपने स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखें



डॉ. राजसी केलकर
देवास (म. प्र.)

शिक्षक हमारे समाज के मार्गदर्शक होते हैं। वे विद्यार्थियों को केवल शिक्षा ही नहीं देते, बल्कि उन्हें अच्छे संस्कार और जीवन जीने की सही दिशा भी प्रदान करते हैं। इसलिए एक शिक्षक का स्वस्थ और प्रसन्न रहना बहुत आवश्यक है। यदि शिक्षक स्वयं स्वस्थ रहेंगे, तभी वे विद्यार्थियों को ऊर्जा और उत्साह के साथ पढ़ा पाएँगे। निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं का सभी शिक्षकों ने अनुसरण करना चाहिए जैसे-

१) **संतुलित आहार लें:-** जैसे हरी सब्जियाँ, फल, दालें, साबुत अनाज, दूध और अन्य पौष्टिक पदार्थ। अधिक तला भुना या बाज़ार में निर्मित भोजन हमें नहीं ग्रहण करना चाहिए।

२) **पर्याप्त पानी पीएँ:-** लगातार बोलने और पढ़ने के कारण शरीर में पानी की कमी हो सकती है इसलिए पर्याप्त मात्रा जैसे २-३ लीटर पानी ग्रहण करना चाहिए।

३) नियमित व्यायाम और योग प्राणायाम अच्छी सेहत के लिए आवश्यक है।

४) **अपने स्वर यंत्र वॉइस बॉक्स का ध्यान रखें:-** लगातार तेज़ आवाज़ में बोलने से गले और स्वर तंत्र पर दबाव पड़ता है। अधिक तेज़ बोलने से बचें, बीच-बीच में थोड़ा विश्राम लें एवं पानी पीएँ।

५) अच्छी नींद है ज़रूरी जिससे शरीर और मस्तिष्क दोनों को आराम मिलता है।

६) **तनाव से बचें -** इसके लिए अनेक उपाय जैसे गहरी साँस लेना, ध्यान, योग, प्राणायाम, संगीत सुनना एवं परिवार के साथ समय बिताएँ।

७) **नियमित स्वास्थ्य जाँच कराएँ -** किसी भी समस्या को नज़रअंदाज़ करने के बजाय समय पर चिकित्सकीय सलाह लेना ज़रूरी है। अतः एक स्वस्थ शिक्षक ही स्वस्थ और खुशहाल पीढ़ी का निर्माण कर सकता है। इसलिए शिक्षकों को अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। "स्वस्थ शिक्षक, स्वस्थ विद्यार्थी और स्वस्थ समाज" - यह केवल एक विचार नहीं, बल्कि बेहतर भविष्य की आवश्यकता है।



शिक्षक समाज का निर्माता

पूजा सक्सेना
ग्वालियर मध्यप्रदेश



सुख चाहे विद्या पढ़ें, विद्या है सुख हेतु।
भवसागर से तरण को, विद्या है दृढ़ सेतु।

किसी महान शिक्षक/लेखक द्वारा कही गई ये पंक्तियां विद्यार्थी जीवन को मार्गदर्शन ही नहीं देती बल्कि जीवन का सही और मूल अर्थ भी बताती हैं।

बदलती शिक्षा पद्धति, बदलते परिवेश के अनुसार विद्यार्थियों के सीखने का तरीका भी बदल रहा है।

पुराने समय में शिक्षा विद्यार्थियों के लिए चैलेंज हुआ करती थी पर बदलती तकनीक और पीढ़ियों के साथ यह शिक्षकों के लिए एक चैलेंज के रूप में सामने आ रही है।

लेकिन कहते हैं कि "शिक्षक समाज का निर्माता है" और वह किसी भी प्रकार के परिवर्तन या बदलाव और चुनौतियों से नहीं डरता।

समय के साथ जैसे-जैसे विद्यार्थियों के सीखने के तरीके बदल रहे हैं आज के शिक्षक भी अपने पढ़ाने के तरीकों में बदलाव कर रहे हैं।

कहते हैं, परिवर्तन जीवन का नियम होता है और समाज में व्याप्त इस परिवर्तन को शिक्षक ने सकारात्मक रूप में आत्मसात किया है।

शिक्षक अपने अनुभवों और मेहनती स्वभाव के कारण ही विद्यार्थियों को यह सिखा पाते हैं कि जीवन में मेहनत और अनुभव कहां-कहां और कैसे काम आते हैं।

शिक्षकों के लिए शिक्षक दिवस एक त्योहार से कम नहीं होता और उन्हें इस दिन ही नहीं बल्कि हर दिन बस यही आशा होती है कि उनके द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थी क्षेत्र विशेष में प्रगति करें और जीवन में सही राह को अपना कर अपने जीवन को सार्थक करें। जैसे श्री राम के अयोध्या लौटने पर दिये जलाकर अयोध्या के लोगों द्वारा दीपावली मनाई गई थी। इसी तरह हर वर्ष, शिक्षकों के मार्गदर्शन से प्रेरित छात्रों द्वारा, जो अपने जीवन की हर चुनौती को पार कर आगे बढ़ाना सीख जाएंगे, जब शिक्षक दिवस मनाया जाएगा तभी एक शिक्षक का जीवन सार्थक सिद्ध होगा।



सत्यपथ का मार्गदृष्टा और राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली है, शिक्षक

नलिन खोईवाल
इंदौर म. प्र.



शिक्षक, राष्ट्र का सजग प्रहरी, मार्गदृष्टा और भविष्य निर्माता भी है । शिक्षक माटी को मनचाहा आकार देकर सुंदर घड़ों का निर्माण करते हैं, यानि देश का भविष्य गढ़ते हैं । शिक्षक उस मोमबत्ती के समान है जो ख़ुद जलकर के दूसरों को प्रकाश देती है । शिक्षक हमें अंधेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। राष्ट्र का सजग प्रहरी और मार्गदृष्टा भी है, शिक्षक।

राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली

दुनिया का कितना ही सामर्थ्यवान व्यक्ति क्यों न हो वह गुरु की शिक्षा का ऋणी है। बच्चे की पहली पाठशाला माँ होती है किंतु शिक्षक तो बच्चे के सम्पूर्ण जीवन की पाठशाला है। शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली है। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींचकर महाप्राण शक्तियों का निर्माण करते हैं। फूल में यदि खुशबू होगी तो वह सहज ही वातावरण को सुगंधित करेंगी। बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने के लिए माता को भक्त,पिता को योगी और आचार्य को ज्ञानी होना चाहिए।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात परंब्रम्ह तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।

सत्यपथ का मार्गदृष्टा है शिक्षक

शिक्षक शब्द को परिभाषित नहीं किया जा सकता और न ही शब्दों के तरकश में रखा जा सकता है । शिक्षक शब्द में सम्पूर्ण ब्रह्मांड समाया है। इसकी व्याख्या करना यानि सूरज को दीपक बताने के समान है। शिक्षक वह जो शिष्ट हो, मिष्ट हो और अभिष्ट हो। क्षमाशील हो और कर्मशील भी हो। शिक्षक वो ही है जो विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य का मार्ग नहीं छोड़ता है । उसे नेकदिल, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, लगनशील, गम्भीर चिंतक, सुयोग्य, सामर्थ्यवान, निपुण, कुशल, स्वस्थ, हृष्टपुष्ट, ज्ञान का धनी, समृद्धशाली, क्रांतिकारी, दृढ संकल्पित, धुन का पक्का, जिम्मेदार और धैर्यवान होना चाहिए। उसका व्यक्तिव आकर्षक और प्रभावशाली होना चाहिए। शिखर तक पहुँचाने वाला और शिष्य की कमजोरियों को दूर करने वाला ही सच्चा शिक्षक है।

शिक्षा की सुदृढ़ आधारशिला है, नैतिकता

शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण कर संस्कारिक बनाना है । शिक्षक हमें सिखाते हैं कि, अपनी धरती अपना आकाश पैदा कर, हर सांस में नया विश्वास पैदा कर, मांगने से कब मिलती है मदद, अपनी मेहनत से नया इतिहास पैदा कर। कृष्ण सा आदर्श गुरु और एकलव्य सा शिष्य न हुआ है और न होगा। लेकिन आज के बदलते परिवेश में गुरु-शिष्य के पाकीज़गी भरे रिश्तों में कड़ुवाहट घुल गई है। मर्यादा और नैतिकता का पालन ही शिक्षा की मजबूत आधारशिला है। जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करें, जो हमें धन का गुलाम बनाएं, जो हमें भोग विलास में डुबोएं, जो हमें दूसरों के विनाश का पाठ पढ़ाएं, वह शिक्षा, शिक्षा नहीं, भ्रष्टता है । ग्लोबलाइजेशन के इस युग में आज बच्चों को नैतिक और रोजगारमूलक शिक्षा की अधिक आवश्यकता है । शिक्षा को बोझमुक्त कर कर्मयुक्त बनाना ज्यादा श्रेयष्कर है।

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय ।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविंद दियो बताय ।।

भगवान तो केवल रास्ता बताता है किंतु गुरु सम्पूर्ण जीवन संवारता है। गुरु भगवान से भी बढ़कर है। जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाए है और तीनों लोकों का तेजस्व जिनके चेहरे को दैदीप्यमान करता है, वो शिक्षक है । शिक्षक वह जौहरी है जो पत्थरों को तराश कर बहुमूल्य कोहिनूर हीरे का निर्माण-सृजन करता है । शिक्षक एक योद्धा है, क्रांतिकारी है, रचनाधर्मी है, सृजनकर्मी है, एक संत भी है, एक कुशल और चतुर राजनीतिज्ञ भी है, एक समाजसेवक भी है और एक राष्ट्रभक्त भी है सच्चा शिक्षक।

समर में घाव खाता है उसी का मान होता है,
छिपा उस वेदना में अमर बलिदान होता है।
सृजन में चोट खाता है छैनी और हथौड़ी से,
वहीं पाषाण मंदिर में कहीं भगवान होता है।



एक पुस्तक हो उपहार

डॉ. सूर्य प्रताप राव
रेपल्ली, मुंबई



ज़माना बदल गया है, सब बदल रहे हैं, और हम सब भी बदल रहे हैं, ये कोई आज की बात नहीं है और न कोई ऐसा विशेष विषय की जिसे गंभीरता से सोचा जाए।

कुछ परिवर्तन परिस्थितियों से, कुछ अपनी सहूलियत के लिए तो कुछ परिवर्तन किसी को दिखाने या कुछ लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए करना होता है, करते भी हैं।

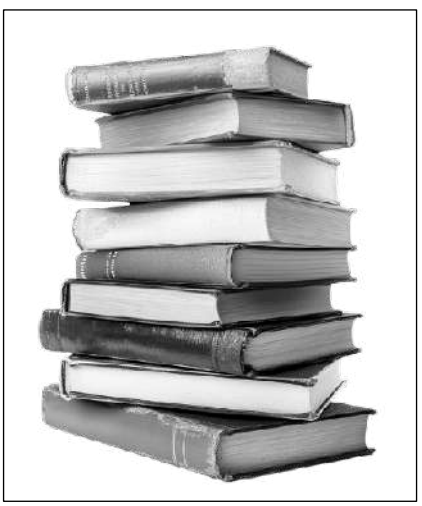
पर इन सब को अलग रख, बस एक विषय पर हम आज ये चिंतन करेंगे के ऐसा क्या और ऐसा क्यूं हुआ, क्या सही है, या क्या ग़लत है, या फ़िर ये सब तो हमने पहले कभी नहीं देखा, समझा या इस विषय पर न जान सके कि इतनी महत्वपूर्ण विषय हमारे बीच से अचानक कैसे बाहर हो गई या ये पता ही नहीं चला....

"विषय है अध्ययन पुस्तकों का"

पुस्तकें पढ़ना: -

ये बहुत ही छोटा और कोई ऐसा इतना महत्वपूर्ण विषय नहीं है। पर आज के इस भाग दौड़ की ज़िंदगी और प्रतियोगिता भरी जीवन के इस होड़ में लगभग बहुत लोगों के द्वारा पुस्तकें पढ़नी और किसी विषय पर कुछ लिखने की आदत या कला अब लगभग ख़त्म सी हो गई है या ये कहे के पुस्तक पढ़ने और कुछ स्वयं लिखने की कला विलुप्त सी होती जा रही हैं।

बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की आदत न डालने की जिम्मेदारी, हमारी, समाज, स्कूल के उन शिक्षकों की भी है । पर आजकल के शिक्षक बच्चों को मोबाईल पर विषय से संबंधित सामग्री उपलब्ध होने की जानकारी दे कर बच्चों को पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं जिस कारण बच्चे पुस्तकों में समस्या की समाधान खोजने के जगह, मोबाईल पर कुछ चंद मिनटों में ही अपने समस्या या आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।



पहले जिस मोबाईल को बच्चों से दूर रखने की बात उनके पालकों और शिक्षकों के द्वारा कही जाती थी वही आज उन बच्चों को मोबाईल से जानकारी लेते देखते हैं तो वो फूले नहीं समाते, जिसका कारण है, पालकों में उस विषय पर जानकारी का अभाव और उन शिक्षकों को उस बच्चे को पुस्तकों में से समाधान खोजने से बचना इत्यादि कारण बच्चों को पुस्तकों से दूर और मोबाईल के करीब लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसा नहीं है के मोबाईल के उपयोग से मुझे कोई आपत्ति है या उसका विरोध करने को मै कह रहा हूं।

पहले, जब कोई प्रश्न का उत्तर उस बच्चे को अपने पास उपलब्ध पुस्तक में नहीं मिलने पर वह दूसरे साथी के पास उपलब्ध पुस्तक में अपने प्रश्न का जवाब या उत्तर खोजने की कोशिश करता था, और यह प्रक्रिया तब तक उसका चलता था जब तक के उसके प्रश्न का सही उत्तर उसे नहीं मिलता था । आज वही बच्चे प्रश्न का उत्तर मोबाईल पर चंद मिनटों पर प्राप्त कर लेता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, एक बच्चे के दिमाग में उठे प्रश्न के या किसी विषय पर सोचने को और उसका समाधान तलाशने के लिए दूसरे पुस्तकों में वो जो अपने दिमाग़ का उपयोग कर रहा था, अब उसे अपने दिमाग़ में ऐसा कोई विचार भी नहीं आ सकता है, जिसके कारण उसका अपना दिमाग वो उस स्थिति को समझने या दिमाग़ से जानने को सोच भी नहीं पा रहा है।

किसी भी विषय को गंभीरता से समझने, उस विषय पर जानकारी प्राप्त करने, और उस प्राप्त जानकारी को संग्रह करने में अपने दिमाग़ का उपयोग किया जाता है, अब वह लगभग विलुप्त होता जा रहा है और आजकल अपने समस्या, प्रश्नों का समाधान अन्य उपलब्ध माध्यम से जैसे AI, Chat GPT, या अन्य कई माध्यमों से प्राप्त करने लगे है।

पहले किसी भी साधारण या पढ़े लिखे व्यक्ति से किसी विषय पर चर्चा करने से वह तुरंत उस विषय से संबंधित पुस्तकों को सामने रखकर उन पुस्तकों में

अपने प्रश्न का उत्तर बड़ी गंभीरता से खोज लेते थे, और उस समय उनके चेहरे पर जो ख़ुशी झलकती थी वो देखने लायक होती थीं। कई कई लोग तो उसका सही अर्थ खोजने के लिए डिक्शनरी तक भी लाकर सामने रखकर बैठ जाते थे और अल्फाबेटिकल तरीके से उस शब्द के मतलब या पर्यायवाची शब्द को खोज निकालते थे, इससे केवल यह नहीं होता कि उस शब्द का सही अर्थ क्या है मिल जाता था उन्हें... उस शब्द के सही अर्थ के मतलब को खोजने में उन्होंने जो अपने दिमाग़ का उपयोग किया था, सही अर्थ में उस समय उनके दिमाग के विकास या उपस्थिति झलकती थी।

आज साधारण से साधारण शब्द का दूसरा पर्यायवाची शब्द बहुत ही कम लोगों को पता है और मोबाईल के कारण वो अपने दिमाग़ में जोर देने से अच्छा मोबाईल पर उसका समाधान खोजने में ज़्यादा सही समझते हैं।

नई नई तकनीक से किसी के मन में उठे उन प्रश्नों के उत्तर भी मोबाईल से तुरंत प्राप्त हो जाते हैं और उस प्राप्त उत्तर से उस समय उनका काम हो जाता है जिसके कारण उस बच्चे या व्यक्ति के दिमाग़ में कोई नई सोच या कोई नया विचार आ नहीं सकता है।

किसी भी विषय पर तुरंत उसकी जानकारी प्राप्त करना ही कोई लक्ष्य नहीं होना चाहिए, उस समय ये भी दिमाग़ में रहे के उसके साथ साथ और क्या क्या उसकी उपयोगिता हो सकती है ये विचार केवल कई पुस्तकों को अपने स्वयं के द्वारा अध्ययन करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

अगर आप किसी विषय में, चार पुस्तकों को पढ़ते हैं तो ये निश्चय है कि आप कुछ अलग सोचने और कुछ हटकर अपनी स्वयं के भी विचार किसी को नए तरीके से समझने, व्यक्त करने में या समझाने के लिए पारंगत हो सकते हैं।

पहले किसी भी अच्छे पढ़े लिखे व्यक्ति से मिलने पर उसके द्वारा किसी भी बच्चे को उपहार स्वरूप पेन और उस बच्चे के उम्र की विषय से सम्बन्धित पुस्तक दिया जाता था।

यहां तक कि कोई बुजुर्ग के घर किसी के जाने पर या किसी बुजुर्ग व्यक्ति के द्वारा किसी से भी मिलने पर उपहार स्वरूप देने वाली कोई वस्तु होती थीं तो वो, होती थी पुस्तकें, वो चाहे रामायण हो या अन्य पारिवारिक या अन्य किसी भी विषय पर उपयोगी पुस्तक।

कुछ वर्षों पूर्व तक, सामान्यतः सभी अपने स्कूल के विषय के पुस्तकों को उनके साथी सहपाठी को या किसी परिचित को पढ़ने दे दिया करते थे, कुछ अपने घर पर अलमारी में सजाकर रखते थे, और अचानक से किसी विषय पर बहस हो तो तुरंत उस अलमारी से उस विषय से सम्बन्धित उपलब्ध पुस्तक में उसका जवाब तलाश करने की परंपरा चलती थी।

लोगों के घरों में कुछ हो न हो, पुरानी पुस्तकों का संग्रह और डिक्शनरी अमूमन सभी के घर पर उपलब्ध होती थी, जो आजकल विलुप्त सी हो गई है।

जब आप किसी विषय पर पुस्तक पढ़ते हैं तो आपके दिमाग में उस विषय के साथ साथ कई और अन्य विशेष विषय पर भी जानकारी होने लगती है और आपका दिमाग़ उस पुस्तक के साथ साथ अपने तरह से भी उस विषय के सन्दर्भ में सोचने लगता है।

एक स्वस्थ इंसान के मस्तिष्क में उठे विचारों को और उसके द्वारा उस विषय पर सोचने, जानकारी प्राप्त करने और उस विषय पर अपने सोच के अनुरूप काफ़ी कुछ सही जानकारी उस व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है।

हर परिवार को अपने बच्चों को किसी न किसी तरह पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा देते रहना चाहिए क्यूंकि जितना किसी पुस्तक को पढ़कर जानकारी या ज्ञान प्राप्त की जा सकती है वो मोबाईल से कभी मुमकिन नहीं।

किसी भी बच्चे के दिमाग का विकास उसके द्वारा किसी भी विषय पर सोचने, और संदर्भित पुस्तकें लगातार पढ़ने से आसानी से हो जाती हैं।

मोबाईल लगातार चलाने से लत लग सकती है और वो किसी भी स्थिति में किसी के लिए चाहे उसकी व्यक्तिगत, पारिवारिक, या उसके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता है, पर यदि किसी के द्वारा किसी भी विषय के लिए पुस्तक पढ़ते रहने से उसे प्राप्त जानकारी, विषय में उसकी दक्षता और उसकी सोचने के अलग अंदाज उस व्यक्ति के साथ साथ उस के परिवार, समाज और देश के प्रगति लिए वह एक जागरूक इंसान और वह एक बेहतर उदाहरण सभी के लिए बन सकता है।

पुस्तकों को पढ़ने से कई तरह के फायदे होते हैं जैसे कि:

उस विषय पर सही जानकारी होना जिससे आप अपना पक्ष रख सकते हैं बिना किसी हिचक के।

पुस्तकें किसी भी व्यक्ति को किसी भी विषय पर विस्तार से जानकारी प्रदान करती हैं।

पुस्तकें पढ़ने से उस व्यक्ति के दिमाग़ पर काफ़ी अच्छा प्रभाव पड़ता है और वह काफ़ी अच्छे तरह से समाज में अपना स्थान बना लेता है।

पुस्तकें लोगों को समझने, उनके समस्याओं को समझने और उन समस्याओं के निराकरण में भी अपना खास स्थान रखती हैं।

किसी भी अच्छे फ़िल्म या कोई भी परिकल्पना किसी न किसी के लिखे हुए पुस्तक से प्रेरित होकर ही की जाती हैं।

अन्ततः, आईए, हम भी आज इस विषय पर चिंतन अपने दिल से कर अपने साथ और अपने चारों ओर रहने वालों को पुस्तकों को पढ़ने से होने वाले लाभ और स्वस्थ समाज में उनका योगदान की चर्चा कर उनसे भी पुस्तक पढ़ने और अपने सामर्थ्य के अनुसार ही किसी को भी अच्छी एक पुस्तक हर वर्ष अपने हाथों से दान करने की अपील करें।

आपके घर कोई आए या आप किसी के घर घूमने या मिलने जाएं, आप अपने साथ मिठाई या फल ले जाएं या नहीं कोई बात नहीं, उस घर में रहने वाले किसी एक सदस्य के उनके उम्र के अनुकूल या उनकी रुचि के अनुसार कोई एक पुस्तक उपहार स्वरूप ले जाकर अवश्य प्रदान करें और स्वस्थ समाज का निर्माण करने में अपनी अहम भूमिका अदा करें।

जैसे कि.....

मिठाई की मिठास रहेगी, बस कुछ पल के लिए

ज्ञान भरी पुस्तकें निभाएगी, साथ सदा के लिए।

एक विनम्र अपील:

अपने घर में आप, लग्जरी सोफा रखें, टीवी 60 इंच का रखें, 400 लीटर का फ्रिज रखें या कोई भी विलासिता की वस्तु, पर अब एक नई सोच रखें, के अपने घर में एक स्थान चिन्हित करें और उस स्थान पर कुछ अच्छी पुस्तकों को सहेज कर रखने की कोशिश करें, कोई भी मित्र, रिश्तेदार, या आपके परिचित आपके घर पर कभी आएं तो उन्हें अपने घर में हाल, डाइनिंग, बेडरूम, दो टॉयलेट, बालकनी सब जरूर दिखाएं पर साथ ही साथ एक पल के लिए उन्हें अपने उन पुस्तकों पर भी उनकी निगाहें डालने को कहें और उन्हें भी ऐसा करने को प्रेरित करें।

साथ ही साथ, जैसे किसी किसी त्यौहार में में कुछ न कुछ खरीदना ज़रूरी है सब मानते हैं, वैसे ही, हर वर्ष कोई एक अच्छी पुस्तक खरीदकर अपने उस चिन्हित स्थान पर रखें और समय निकालकर जरूर उसे पढें और उसकी खास अच्छी बातें, बातों ही बातों में अपनों से जरूर चर्चा करें जिससे कि वो भी उस पुस्तक में भरी हुई ज्ञान रूपी समंदर में गोता लगा सकें।

आपका बस इतना ही करना कई लोगों के जीवन में, विचार में परिवर्तन लाने में अहम भूमिका अदा कर सकती हैं।

ये कभी मत सोचिए कि वो किताब जो सौ पन्नों की दो सौ से तीन सौ की मिल रही है, वह बहुत महंगी है।

आपके द्वारा खरीदी गई उस दो सौ या तीन सौ रूपये से उस लेखक को या उसके प्रकाशक को आपसे कोई करोड़ रुपए की लाभ नहीं हो सकता है पर उस दो से तीन सौ रूपये के पुस्तक को पढ़कर आपको और आपके परिवार को होने वाले ज्ञान से आप और आपके साथी कितने लाभान्वित होंगे, ये परिकल्पना से बाहर हैं।

इसलिए.....

किताब के क़ीमत पर नज़र मत डालिए, डालिए नज़र उस किताब पर जिसे पढ़कर आप इस जगह पर पहुंचे हैं।

बस एक बार कल्पना कीजिए कि:

आपके स्कूल में दाखिला से लेकर आखिरी तक के पढाई की पुस्तकों के कीमत को देखते हुए और कुल होने वाली पुस्तकों के लगभग कीमत को सोचकर यदि आपके पालक उस समय उन पुस्तकों को नहीं खरीदते और आपको उन्हें पढ़ने के लिए नहीं दिया जाता, तो क्या आप आज जो कुछ पढ़ पा रहें हैं, क्या आप सचमुच कुछ भी आज पढ़ने के काबिल होते या आज काबिल इंसान भी होते क्या? विचार कीजिए बस..।



बदलते दौर में शिक्षक और शिक्षा की स्थिति



शैली भागवत 'आस'
इंदौर

इस बार शिक्षक दिवस पर समाज और शिक्षक दोनों के बीच एक मिश्रित प्रतिक्रिया देखने को मिली । एक ओर जहाँ शिक्षकों के मन में इस महान और गौरवशाली पेशे से जुड़े होने का गर्व था, वहीं दूसरी ओर शिक्षा प्रणाली में आए बदलावों और शिक्षकों के प्रति समाज में बढ़ी बेरुखी ने गहरी निराशा भी पैदा की है। शिक्षण को हमेशा से एक महान, पवित्र और अनूठा कार्य माना गया है । शिक्षक केवल साक्षर नहीं बनाता, बल्कि राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करता है । लेकिन क्या वर्तमान में शिक्षकों की स्थिति वैसी ही सम्मानजनक रह गई है? आज का शिक्षक प्रशासनिक कार्यों, कागजी कार्रवाइयों और व्यावसायिक दबावों के बोझ तले दबा हुआ है।



इस बदलते परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक उम्मीद की किरण बनकर सामने आई है। यह नीति रट्टा मार प्रणाली को खत्म कर व्यावहारिक ज्ञान, कौशल विकास और मातृभाषा में शिक्षा पर जोर देती है । यह शिक्षकों को नए जमाने की तकनीकों से जोड़ने और उनकी पेशेवर गरिमा को बहाल करने की वकालत भी करती है। हालांकि, इस नीति का जमीनी स्तर पर पूर्ण क्रियान्वयन और इसके लाभों का हर बच्चे तक पहुँचना अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। निजी क्षेत्र में शिक्षा के इस व्यावसायिक दौर में मैंने स्वयं यह अनुभूत किया है कि कभी क्षितिज के विस्तार (बेहतर अवसरों) की चाह में, तो कभी अपनी स्वायत्तता और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए, एक शिक्षक को अपनी पुरानी कर्मस्थली छोड़ नए गंतव्यों की ओर कदम बढ़ाने पड़ते हैं।

इस स्थानांतरण और परिवर्तनों के बीच, दुनियावी बातें और लोगों की टिप्पणियां तो समय के साथ विस्मृति के गर्त में खो जाती हैं, परंतु जो शेष रह जाता है—वह है विद्यार्थियों का निश्छल अनुराग और आदर । यदि हमने अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा से किया है, उन्हें न केवल विषयगत ज्ञान बल्कि जीवन-मूल्यों और सुसंस्कारों से संचित किया है, तो वे हमें सदैव स्मरण रखते हैं। संभव है कि वय की अपरिपक्वता के कारण वे तात्कालिक रूप से अपनी कृतज्ञता व्यक्त न कर पाएं, किंतु एक सच्चे शिक्षक की अमिट छाप उनके मानस-पटल पर सदैव के लिए अंकित हो जाती है।

आज शिक्षा जब ज्ञान से अधिक डिग्री और केवल नंबरों की होड़ बनकर रह गई है, तब शिक्षक और छात्र के बीच का यही आत्मीय संबंध इस व्यवस्था की असली ताकत है । यदि हमें शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षक की गरिमा को वापस लौटाना है, तो व्यवस्था और समाज दोनों को मिलकर सोचना होगा। शिक्षकों को केवल नौकरीपेशा न समझकर उन्हें वह सम्मान और स्वतंत्रता देनी होगी जिसके वे हकदार हैं, तभी शिक्षा का यह अनूठा कार्य सार्थक हो सकेगा।

पाठक एवं लेखकों द्वारा प्राप्त

प्रतिक्रियाएँ

काव्यशैली का अगस्त 2026 अंक बेबसाइट पर पढ़ा, बहुत अच्छा लगा । पत्रिका की नवीनतम वेबसाइट को आकर्षक तरीके से सजाया गया है जिसमें विस्तार से जानकारी दी गई है । अगस्त अंक में चौमासे के मुख्य पर्व रक्षाबन्धन सहित भगवान शिव की महिमा से सम्बद्ध रचनाएँ और वर्तमान समसामयिक परिस्थितियों की चर्चा से सराबोर लेख पढ़कर अच्छा लगा। संपादकीय में राष्ट्र की वर्तमान में उपजी विषम परिस्थतियों पर गहरी चिंता व्यक्त की गई है। राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रभक्ति की रचनाएं प्रत्येक भारतवासी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

पत्रिका में मेरी कविता "पुरानी पीढ़ी" को स्थान देने हेतु आपकी पत्रिका काव्यशैली की सम्पूर्ण टीम का हार्दिक आभार। पत्रिका में स्तरीय रचनाएँ प्रकाशित हों गुणवत्ता बनी रहे और वह राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त करे यही शुभकामनाएं!

- जगदीश शर्मा सहज
अशोकनगर म. प्र.

'काव्य शैली' राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका के अगस्त अंक में मेरी दो कविताओं को स्थान देने के लिए हृदय से आभार।

साहित्य और सृजन के प्रति समर्पित 'काव्य शैली' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका रचनाकारों को अपनी भावनाओं और विचारों को पाठकों तक पहुँचाने का सुंदर मंच प्रदान करती है। ऐसी साहित्यिक यात्रा का हिस्सा बनना मेरे लिए हर्ष और सम्मान का विषय है।

सम्पादकीय टीम को साधुवाद एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

- संगीता बिंदल जी

नमस्कार

काव्य शैली राष्ट्रीय पत्रिका का अगस्त माह का अंक पढ़ा। खूब सुंदर रचनाएं हैं । संपादन टीम का खूब-खूब धन्यवाद मेरी रचना को स्थान देने के लिए एवं सभी रचनाकार को खूब-खूब अभिनंदन।

- मित्तल टिलवा जी
गुजरात

'काव्यशैली' पत्रिका का अगस्त अंक अत्यंत सराहनीय और संग्रहणीय है। इस अंक में स्वतंत्रता दिवस की देशभक्ति और रक्षाबंधन के पावन पारिवारिक स्नेह को जिस खूबसूरती से शब्दों में पिरोया गया है, वह पाठकों के दिलों को छू लेता है। अगस्त की रिमझिम बारिश के बीच राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक धरोहर का यह संगम पत्रिका को एक अनूठी जीवंतता प्रदान करता है। बेहद ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सामग्री को शामिल करके संपादक मंडल ने एक बेहतरीन प्रयास किया है। देशभक्ति की भावना और रिश्तों की मिठास से भरपूर यह अंक हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए एक बेहतरीन सौगात है।

- दीपक कुमार
राजस्थान



गुरु की छत्रछाया

जीवन को आधार बनाने,
कदमों की रफ्तार बढ़ाने,
मंजिल को आसान बनाने,
एक दिव्य स्वरूप है आया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

अहंकार का मूल मिटाने,
मन को निर्मल सदा बनाने,
ज्ञान की गंगा जग में बहाने,
दलदल में भी कमल खिलाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

आकर्षक व्यक्तित्व बनाते,
ज्ञानवान, गुणशील बनाते,
समत्व भाव हमें सिखलाते,
अध्ययन को जीवन बनाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

अनुशासन का पाठ पढ़ाते,
मर्यादा का मान बढ़ाते,
संस्कारों की राह दिखाते,
प्रतिभा को विकसित कराया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

मातृरूप में प्रेम सिखाते,
पितृरूप में संघर्ष बताते,
ईशरूप बन शक्ति जगाते,
चुनकर सही दिशा में बढ़ाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

चक्रव्यूह की नीति बताते,
अभेद्य को भेदना सिखाते,
अभिमन्यु-सा साहस जगाते,
हर संकट से पार कराया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

मात-पिता का ऋण समझाते,
गुरु-शिक्षा का मान बढ़ाते,
ईश्वर का आभार जताते,
जीवन को कृतार्थ बनाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

हाथ पकड़ अपना-सा मानें,
शिष्य बनाकर हमें सँवारें,
भय के बादल दूर भगाएँ,
आशीषों से जग हर्षाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

योगेश्वर की लीला समझाएँ,
सर्वेश्वर की सृष्टि दिखाएँ,
महेश्वर का ध्यान धराएँ,
मंत्रों का पावन ज्ञान कराया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।

पदचिह्नों को हृदय बसाएँ,
अनुसरण नित करते जाएँ,
धुंध हटाकर राह दिखाएँ,
श्रीचरणों में शीश नवाया—
मिले गुरुवर की छत्रछाया।



उद्देश्य तिवारी 'उदय'
सतना, मध्यप्रदेश

नवसर्जन की चेतना

रंगीन दुनिया में नवसृजन की चेतना जगाने,
स्वयं जन्मे विश्वकर्मा भगवान।
ब्रह्मा विष्णु महेश सदृश आपको भी,
ईश्वर स्वीकारते वेद पुराण॥

पूजा पर्व सत्रह सितम्बर को,
मजदूर संगठन आपको करते प्रणाम।
संकल्प दिवस के रूप में मनाते है,
सारे इंजीनियरिंग संस्थान॥

औजारों में शक्ति जगाते,
श्रम को देते मान सदा।
मशीनों में जीवन भरते,
नवसृजन का मार्ग दिखाते॥

अमृतपूर्ण दैवीय महिमा से आपने,
चारों युगों में किया सृजन।
स्वर्गलोक, लंका, द्वारिका, इन्द्रप्रस्थ जैसे,
पुरी में भी मन्दिर का किया निर्माण सृजन॥

सृजन और निर्माण की यही प्रेरणा,
उद्यमशीलता को देती सम्मान।
प्रगति का दीप जलाकर, श्रद्धा से मन करके,
शीश झुकाकर विश्वकर्मा जी को करें प्रणाम॥



भारती कुमार
नवाबगंज, कानपुर



DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

साहित्य, कला, संस्कृति को समर्पित
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े

प्रतिमाह दिल्ली से प्रकाशित

- कविता, गीत, ग़ज़ल, काव्य की विभिन विधाओं की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन
- शिक्षा, संस्कृति, कला आधारित कहानियों, लेख - आलेख
- 'बोलती किताबें' रीडर्स क्लब से बच्चों और बड़ों को जोड़ कर उनमें पाठन के प्रति रुचि जगाना
- वर्ष भर आयोजित साहित्यिक कार्यशाला, कार्यक्रमों में सहभागिता का अवसर
- साहित्य जगत में पहचान बनाने का अवसर
- किसी विशेष व्यक्तित्व पर विशेषांक प्रकाशन की सुविधा
- हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े



आइए शब्दों की इस पावन यात्रा में
साथ चले, साथ बढ़े

SUBSCRIPTION DETAIL

1500/-
वार्षिक

पत्रिका से जुड़ने एवं अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :
9425478866
+917982407065
ईमेल : kavyashaily049@gmail.com

काव्यशैली - जहाँ शब्दों में संस्कार, विचारों में विस्तार और भावों में सुंदरता है।

अच्छे नंबर या ज्यादा नंबर

मितल टिलवा
गुजरात



वैसे तो जब से समझ आई कि पढ़ना जरूरी है और अच्छे नंबर लाना भी जरूरी है तब से हंमेशा सरस्वती माता की कृपा से पढ़ने में अच्छे नंबर आते थे। परंतु मेरा भाई बचपन से ही हंमेशा कम नंबर से पास होता था।

जब परीक्षा का परिणाम आता था तो मैं अच्छे नंबर से पास होती थी तो वह थोड़े कम नंबर से पास होता था ।पर वह हमेशा यही कहता था दीदी से में ज्यादा नंबर लाया हूं। मैं १-५ नंबर में पास होती थी और वह ३५-४० उसे ऐसा लगता था कि उसी के नंबर ज्यादा है।

आज जब हम यह बात याद करते हैं तो खूब हंसते हैं। पर जो बच्चे ऐसा सोचते हैं उन्हें अच्छे नंबर और ज्यादा नंबर में फर्क बताते हैं।

जीवन में शिक्षा का महत्व भी है और जरुरी भी है।

सदस्यगण



E-mail : kavyashaily049@gmail.com Mob. : 79824 07065 9425478866